असन्तोष के दिन

राही मासूम रजा

राजकमल प्रकाशन
नयी दिल्ली पटना

शीला सन्धू के नाम
कि जो वह
लगातार डाँट न पिलाती रहती
तो शायद मैं यह उपन्यास
न लिख पाता

—राही मासूम रज़ा

इस कहानी मे जो तोग चल फिर रहे हैं, हँस-बोल रहे है, मर-जी रहे हैं, उन्हे अल्लाह मिया ने नही बनाया है, मैंने बनाया है। इसलिए यदि अल्लाह के बनाये हुए किसी व्यक्ति से मेरे बनाये हुए किसी व्यक्ति का नाम पता मिल जाये तो क्षमा चाहता हूँ।

—राही मासूम रज़ा

भूमिका

यह तो मौसम है वही
दद का आलम है वही
बादलो का है वही रग,
हवाओ का है अन्दाज़ वही
ज़ख्म उग आये दरो दीवार पे सब्ज़े की तरह
ज़ख्मो का हाल वही
लफ्ज़ो का मरहम है वही
दद का आलम है वही
हम दिवानो के लिए
नग्मये मातम है वही
दामने गुल पे लहू के धब्बे
चोट खायी हुई शबनम है वही
यह तो मौसम है वही
दास्तो ।
आप,
चलो
खून की बारिश है
नहा लें हम भी
ऐसी बरसात कई बरसो के बाद आयी है ।

पुराना ऐडीशन

आकाशवाणी से अग्रेजी म समाचार आ रहे थे कि सरकारी आकडो के अनुसार भिवण्डी, थाणे कल्याण और बम्बई महानगरी मे कुल मिलाकर अब तक 151 आदमी मारे जा चुके है।

फातमा ने लुक्मा दिया ! एक सिफर और बढा लो, कम से-कम।

किसी ने फातमा की बात का जवाब नही दिया। सबन उसकी तरफ देखा जरूर। शायद सब फातमा से सहमत थे। 37 वर्षों का यह अनुभव था कि इन मामलो म सरकारी आकडे हमेशा गलत होते हैं।

यू भी आकाशवाणी पर से जनता का भरोसा कब का उठ चुका था। समाचारो के शौकीन तो बी बी सी सुनते है। साहब आप कुछ कह, अग्रेज झूठ नही बोलता !

और लन्दन स कल साढे बारह बजे रात को रेवती का फोन आया था।

"अब्बास भाई, मैं रेवती बोल रहा हूँ।"

'अरे कब आये ?"

"आया कहाँ। लन्दन से बोल रहा हूँ।" अब अब्बास घबराया कि इतनी गयी रात को रेवती न लन्दन से क्या फोन किया ?

"सलमा कसी है ?" अब्बास न पूछा।

सलमा उसकी छोटी बहन का नाम था। और जब सलमा-रेवती इश्क की खबर का बम फूटा और उसके खानदान की नौ सौ बरस पुरानी दीवारें हिल रही थी और घर म कुहराम मचा हुआ था और अब्बास ने चुप साध ली थी और अडोस पडोस तक की बडी बूढ़ियाँ सलमा के मरने की दुआएँ माँग रही थी। तब उसने चुपचाप रेवती से सलमा की शादी करवा दी थी कि मज़हब का इश्को से क्या लेना देना।

कहते हैं इश्क नाम के गुज़रे हैं एक बुजुग
हम लोग भी मुरीद उसी सिलसिले के हैं।

उसके लिए इश्क सबसे बडा था और जहाँ तक इश्क का सवाल है अब्बास जानता था कि इश्क पोस्टल ऐडरेस नही पूछता पर वह हमेशा ठीक पते पर पहुँच जाता है।

अगर खानदान म उसकी माली हालत सबसे अच्छी न रही होती तो शायद वह कुजात कर दिया गया होता। पर सभी को उसके पैसों की जरूरत थी। इसलिए अब्बा के सिवा सभी खून के घूंट पीकर चुप हो गये। बडी बाजी ने गुस्से मे उसके लिए एक नया स्वेटर बुनना शुरू कर दिया। बाजी न गुस्से म उसके साथ जाने के लिए चने का हलवा पकाना शुरू कर दिया और हैदरी फूफी गुस्से म उसके लिए इमाम ज़ामिन तैयार करने लगी

बाद मे सब मिले। बस सलमा नही मिली। क्योकि वह शादी के बाद ही लन्दन चली गयी। वह हर साल आन का प्रोग्राम बनाती और वह प्रोग्राम गडबड हो जाता और अब तो उसकी बडी बेटी तसनीम सत्रह साल की हो चुकी है और उर्दू नही जानती। बोल लेती है पर लिख पढ नही सकती। सलमा को इसका दु ख भी था। उसने एक खत मे लिखा था

"मँझले भाई कमबख्त किसी तरह उर्दू सीखने पर तैयार नही होती।

तहसीन माशा अल्लाह से कलामे-पाक भी पढ रही है और उर्दू भी "

तहसीन उसकी दूसरी बेटी का नाम था जो अब शायद पन्द्रह साल की होगी

"अरे चुपचाप रिसीवर लिये दीवार का क्या देख रहे हो ?" सैयदा की आवाज़ ने उसे चौंका दिया। लन्दन से सलमा की रुआसी आवाज़ आ रही थी

'मैं तो बी बी सी पर बलवों की तस्वीरें देखते ही रोने लगी कि अल्लाह मँझले भाई भी तो बान्द्रे मे हैं "

"बलवा बान्द्रा ईस्ट मे हो रहा है।"

'आपकी तरफ सब खैरियत है ना " टी वी पर महदी हसन के प्रोग्राम का कसेट शुरू हो गया।

देख तो, दिल कि जा से उठता है,
यह धुआँ-सा कहाँ से उठता है।

"अरे भई ज़रा अवाज़ दबाव।" अब्बास ने झल्लाकर कहा।

"जी !" उधर से सलमा ने पूछा।

"तुमसे नही !" अब्बास ने कहा। "तसनीम और तहसीन कैसी हैं ?"

'तसनीम तो अपने एक नीगरो फ्रेण्ड की बथ-डे पार्टी म गयी है। खाकपडी को वह कलूटा ही पसन्द आया। मैने तो साफ कह दिया कि होशो म रहो।"

दीवारो मे दीवारें। साढे सत्तर बरस पहल मुहल्ला सयदवाडे की बडी बूढियाँ खुद सलमा के बारे म ऐसी बातें कह चुकी थी खाकपडी को वह मुआ हिन्दू ही पसन्द आया। '66 और '84—18 वर्षों मे सिफ एक शब्द बदला, 'हिन्दू' की जगह कलूटा' आ गया। सन् '66 की क्रान्तिकारी सलमा '84 तक आते जब 17 वर्ष की तसनीम की माँ बनी तो अतीत की दलदल म गिरी और बडी बाजी बन गयी। हैदरी फूफी बन गयी। पडोस

की अब्दुरहीम वा बन गयी। अल्लाह ! उलटे पैरो की यह यात्रा कब खत्म होगी !

उधर से सलमा लगातार बोले जा रही थी—"पर आपके चहेत रेवती के कानो पर ता जने क्या अल्लाह की मार है कि बेटी की जवानी तक नही रेंगती। बैठे मुसकुरा मुसकुरा के पाइप पिय जा रहे हैं। अना भैस जसा रग तवे म अल्ला ने आँख-नाक लगा दिया है। अच्छाई क्या कि मूआ क्रिकेट अच्छा खेलता है। मैंने ता गुस्से मे आकर मुजतवा के बैट वट भी तोड डाले। यह सव परेशानिया क्या कम थी कि वहाँ वम्बई म बलव भी शुरू हो गये। और बी बी सी ने ऐसी खौफनाक तस्वीरें दिखलायी, मँझले भाई कि मेरा तो दिल हिल गया। वह तो अल्ला भला करे रेवती का फोन लगा के थमा दिया '

टी वी पर अब मक्सद' चलने लगी थी। माजिद वी सी आर की कलें ऐंठ रहा था। सयदा ने अपनी जगह से बैठे-बठे डाँटा—

अरे मज्जू, अल्ला के वास्ते वी सी आर पर रहम कर !"

और राजेश खन्ना न श्रीदेवी से पहेली बुझायी

'पहले तो अरोडा मरोडा, फिर थूक लगा क घुसेडा।"

श्रीदेवी की समझ म यह पहेली नही आयी तो उसने वह पहेली दुहरायी। समझ म नही आयी। अब राजेश खन्ना ने समझाया कि चूडी और चुढौरा। पहले कलाई मराडता है। फिर थूक लगा के

अब्बास ने लाहौल पढकर हाथ बढाया और टी वी बन्द कर दिया।

क्या हुआ ? ' सलमा ने लन्दन से पूछा।

यहा बलवो से ज्यादा खतरनाक एक फिल्म चल रही थी—'मकसद'। उस ब द कर दिया।'

'कादिर खा को क्या हो गया है। मँझले भाइ ! छी छी ! इतने ग दे और बेहूदा डायलाग। सेंसरवाला न यह फिल्म अफयून के नशे म देखी थी

क्या !"

"पता नहीं पर राजेश खन्ना की पहेली में जबान की गलतियाँ हैं, सुई में धागा, थूक लगा के घुसेडा नहीं जाता, पिरोया जाता है। डाला जाता है। और यह "

"ऐ खाक डालिए मुए पर।" सलमा ने कहा। "तहसीन को हिन्दी फिल्म देखने का बड़ा शौक है। मैंने कहा यह अक्सद मक्सद जैसी फिल्में नहीं चलती घर में। 'आक्रोश' देखो। 'अधसत्य' देखो। 'खण्डहर' देखो। 'सारांश' देखो "

"क्या 'सारांश' का कसेट आ गया ?"

' मुद्दत हुई। मुझे तो वह धाटन हतगडी अच्छी नहीं लगी। कस्तूरबा बनने का नशा उतरा नहीं। इतराती ज्यादा है। ऐक्टिंग कम करती है और उर्दू बहुत ऐंठ ऐंठ के बोलती है।"

"उर्दू नहीं, हिन्दी।" अब्बास ने कहा।

' यह बहस फिर मत शुरू कीजिए मँझले भाई।" सलमा ने कहा, "भाभी कैसी है।"

"उन्हीं से पूछ लो।"

रिसीवर उसने सैयदा को दे दिया।

माजिद 'मिली' चला रहा था। मगर प्रिण्ट खराब था। जया भादुड़ी फदक फुदक कर टेरेस पर बच्चियों के साथ कोई गाना गा रही थी।

यकायक सलमा की किसी बात पर सैयदा खिलखिला के हँस पड़ी और अब्बास को लगा कि बम्बई में होनेवाले बलवों की खबर गलत है और यह खबर झूठी है कि मक्सद हिट हो गयी है। क्योंकि ऐसी फिल्मों के हिट होने का मतलब यह है कि ऐडल्टरेटिड सिनेमा ने तो सिनेमा को पीछे धकेल दिया है। यह जहरीली शराब पीकर कितने लोग मरेंगे यह कौन सोचता है।

मासिक 'अदब' के सम्पादक होने के नाते इस सिनेमा का विरोध करना

क्या उसका कर्तव्य नही है ?

कर्तव्य ! केवल एक शब्द ! अप और शब्द के बीच सो व्हाट ऐवरी-बडी कम्प्रोमाइज जेज ।

फातमा की आवाज आयी । झल्लायी हुई । अब्बास न मुडकर देखा । हमेशा की तरह फातमा और माजिद मे किसी बात पर बहस छिडी हुई थी ।

"दन यू आर ए फूल ।" माजिद बोला ।

"एण्ड यू आर ए डैम फूल ।" फातमा ने कहा ।

दोनो की निगाह उस पर पडी और दोनो हँसने लगे ।

माजिद को बहस करन का बडा शौक था । लोग अगर अमरीका के तरफदार होते तो वह रूस का तरफदार हो जाता । लोग अगर यहूदियो की तारीफ करते ता वह हिटलर का भक्त हो जाता ।

अब्बास, माजिद की तरफ देखकर दिल-ही दिल मे मुसकरा दिया । वह खुद अब्बास का बचपन था । फर्क सिर्फ यह था कि माजिद को इस उम्र मे जितनी बातें मालूम थी । उतनी बाते अब्बास को इस उम्र मे मालूम नही थी । या तब शायद इतनी बातें ही न रही हो ।

"तुम लोग आखिर हर वक्त झगडत क्यो रहत हो ?" अब्बास ने कहा ।

"यही हर वक्त लडती रहती हैं अब्बू ।" माजिद न खबर दी ।

"लाइयर ।" फातमा ने बयान दिया । सगीता से लव नही चल रहा है तेरा "

"सगीता !" अब्बास चकरा गया । "यह तो बिलकुल ही नया नाम है सयद साहब !"

"गोदरेजवाले मिस्टर शर्मा की बेटी है ।" सैयदा ने खबर दी ।

मगर तुम दोना हमेशा अग्रेजी म क्यो झगडते हो । उर्दू हिन्दी मे नही झगड सकते तो मराठा मे झगडो ।"

"मराठी।" माजिद गनगना गया—"आई हेट मराठी।"

वह क्यो भई।"

"बिकाज आफ यह कि मराठी ने तो हाई स्कूल म मेरी पुजिशन खराब की।"

'औनली मराठीज ऐपियर आन द मेरिट लिस्ट।" फातमा ने फसला सुना दिया।

'ट्रान्सलेट," अब्बास ने कहा।

'सिफ मराठिया के नम्स ओह हैल नाम मुझे नही मालूम कि मेरिट लिस्ट का हिन्दी उर्दू म क्या कहत हैं।"

'मुझे भी नही मालूम।" अब्बास ने कहा।

फातमा खिलखिलाकर हँस पडी और उसके गले मे बाँहे डालकर प्यार करन के बाद बोली। मैं सोने जा रही हूँ।"

"ए मज्जू।" सयदा ने फरियाद की। "खुदा के वास्ते यह 'मिली रिली' बन्द करो, गोलमाल' लगा दो।"

माजिद ने सुना ही नही। वह वाकमैन' पर उस्ताद अमीर अली खा का अहीर भैरव सुनन मे लग चुका था। कानो पर ईअर फान चढा हुआ था। खुद सयदा भी कालीन पर लेटकर 'सुषमा' मे छपी हुई तस्वीरें देखने लगी क्योकि देवनागरी लिपि वह जानती नही थी।

'यार एक हो जाये।" एकदम स अब्बास का प्यास लग गयी।

"कोई जरूरत नही।' सयदा न डाटा। 'कफ्यू यू ही लगा हुआ है।'

वह हँस पडा। "कफ्यू को चाय से क्या लेना देना भई।"

दरवाजे से पीठ लगाये जया भादुडी और अशोक कुमार के सीन पर बाकायदा रोता हुआ राम माहन उठ खडा हुआ।

अब्बास देख सकता था कि राम मोहन दिल मार के चाय बनाने उठ रहा है कि वह अभी जया भादुडी और अशोक कुमार के सीन पर और

रोना चाहता है।

'यौर अभिताभ इज ए हैम" फातमा की आवाज आयी। अब्बास ने देखा कि फातमा और माजिद म 'वाकमैन' के लिए खीचातानी हो रही है।

"नो' मज्जू दहाडा। 'तुम्हारे दिलीप कुमार का फटका लगा दिया उसने 'शक्ति' म। और फिर वह अब्बास की तरफ मुडा। 'अब्बू आप बताइए। 'मजदूर' और मशाल' म दिलीप कुमार न क्या किया है ?'

हगा है।' अब्बास ने कहा।

'छी अब्बू!" फातमा हँसते हुए उसे मारने लगी। "और अमिताभ ने महान' और इकलाब' और 'कुली' म क्या किया है ?"

"मुद्दे गिराये हैं कोख-कोख के।" अब्बास न कहा।

"भई मुन शुश्मा' पढने दो।" सयदा ने कहा।

'माँ" मज्जू ने आवाज़ा फेंका। तुम तो हिन्दी को सिफ दख सकती हो।"

सयदा ने करवट ली तो पण्डित नेहरू की आटोग्राफ की हुई तस्वीर मेज़ से नीचे गिर पडी।

इस तस्वीर म सयदा की जान थी। तब वह चार साल की थी उसके पिता सयद अमीर अली यू पी मे मिनिस्टर लगे हुए थे। पण्डितजी के चहेत थे। पण्डितजी लखनऊ आय हुए थ तो उसकी सालगिरह की पार्टी मे दस मिनट को आ गये थे। यह तस्वीर तभी की थी। पण्डितजी उसे कक खिला रहे थे।

ज़ाहिर है कि कोई उस तस्वीर की सयदा को नही पहचानता था। जो उस तस्वीर को देखता यही पूछता कि यह कौन बच्ची है जो पण्डितजी के हाथ से केक खा रही है और सैयदा बडे अन्दाज से कहती कि यह वह है! यह कहते वक्त उसका चेहरा खुशी स तमतमा जाता जसे इस तस्वीर की वजह से वह हिन्दुस्तान के इतिहास का एक हिस्सा बन गयी हो। और

इसी तस्वीर के कारण सैयदा श्रीमती गाँधी पर भी दिल ही दिल मे एक अधिकार जमाये हुए थी। वह उनकी हर उलटी सीधी बात का समथन करती। हद तो यह है कि वह इमरजैंसी का भी बचाव करती थी और श्रीमती गाधी पर उसका अटल भरोसा तब भी नही डिगा जब इमर्जैंसी के दिनो म एक रात पुलिस आकर उसके पति को भी पकड ले गयी। इल्जाम यह था कि वह सरकार का तख्ता उलटने पलटने की कोशिश कर रहा है। इश्किया शायरी करनेवाला और मासिक 'अदब' निकालनेवाला अब्बास ससार के सबसे बडे लोकतन्त्र का तख्ता उलटने की कोशिश कर रहा है। जबकि अब्बास न सिफ इतना गुनाह किया था कि उदू पत्रकारो की सभा म उसने इमर्जैंसी के पक्ष मे वोट नही दिया था।

जनता सरकार बन जाने के बाद अब्बास छूटा। घर आया तो उसने देखा कि सयदा कमरे की झाड पोछ मे लगी हुई है। आहट पर वह मुडी। अब्बास को देखकर वह खिल उठी। उसने लपककर उसके गाल चूमे। इधर उधर की बातें करने लगी। वह जेल की बात करना नही चाहती थी। उसके दिल के एक कोने मे पानी भर रहा था कि श्रीमती गाधी न उसके अब्बास को जेल भेज दिया था।

पर अब्बास न देखा कि वह तस्वीर अपनी जगह पर है और कट ग्लास के एक पतले से गुलदान मे गुलाब का एक लाल फूल लम्बी सी डण्ठल से झुककर पण्डितजी का मुह चूम रहा है।

इसीलिए जब उसने देखा कि उस तस्वीर के गिरने का सैयदा पर कोई असर नही हुआ तो उसे बडी हैरत हुई।

' मदर !'' मन्जू ने ईयरफोन कान से हटाते हुए कहा— 'योर पण्डित-जीज फोटोग्राफ !''

मगर इससे पहले कि सयदा कोई जवाब देती एक जबरदस्त धमाका हुआ—उसके फ्लट की खिडकियो के शीशे काँप उठे। फिर लोगो के चीखने-

चिल्लाने की आवाज़ आने लगी और फिर गोलियाँ चलने लगी ।

रात के ढाई बज रहे थे । बाहर हगामा था और सैयद अली अब्बास, सम्पादक मासिक 'अदब' के फ्लट मे सब चुप थे । टी वी पर 'मिली' खत्म हो रही थी । हवाई जहाज़ उन्ही सितारो मे गुम रहा था, जिन सितारो मे 'मिली' को बडी दिलचस्पी थी ।

राम मोहन चाय लेकर आ गया ।

तुम पी जाव !" अब्बास ने कहा है ।

'यह बम तो मदीना मजिल म फटा है ।" सैयदा ने कहा—'खुदा गारत करे इन हिदुओ को ।" वह उठकर बठ गयी । "एक प्याली चाय मेरे लिए भी बना लाव ।" उसने राम मोहन से कहा । 'और सुन ! कल अपनी बीबी और बच्ची को कर्फ्यू उठते ही उस झोपडपट्टी से यहाँ उठा ला ! क्या पता वहाँ कब क्या हो जाय !'

"जी बीबीजी !" राम मोहन उसके लिए चाय बनाने चला गया । मज्जू ने उठकर टी वी और वी सी आर को बन्द कर दिया ।

बाहर गोलियो की आवाज़ बन्द हो चुकी थी । डरे हुए लोगों के चीखने-चिल्लाने की आवाज़ें अपनी थी और कही दूर स आते हुए फायर ब्रिगेड की घण्टिया बज-सी रही थी ।

और खुली हुई खिडकी से नारियल के पड मे अटका हुआ चाँद दिखायी दे रहा था ।

वक्त ने ऐसा पेच लगाया टूटी हाथ से डोर,

आँगनवाले नीम म जाकर अटका होगा चाँद ।

हम सभी कटी हुई पतग की तरह आँगनवाला नीम का पेड ढूँढ रहे हैं क्योकि हम क्षेत्रवादी दगा मे घिरे हुए हैं और कुछ लोग हमसे यह कह रहे हैं कि बम्बई हिन्दुस्तान म नही महाराष्ट्र मे है ।

अब्बास न बेखयाली म पास पडी हुई किताब उठा ली । वह वाहिद

की भूगोल की किताब निकली। पहले ही पन्ने पर भारतवर्ष का एक रंगीन नक्शा था।

'यार सैयदा यह किताब गलत है।" उसने कहा, "महाराष्ट्र को हिन्दुस्तान मे दिखा रही है।"

"पुराना ऐडीशन होगा।" सैयदा न कहा। और कमरे मे सन्नाटा हो गया।

सम्पादकीय

या अल्लाह, यह कैसे रिश्ते हैं।

स्वर्गीय सैयद अमीर अली की बडी बेटी सैयदा मूसवी हिन्दुओं को ग़ारत हो जाने की बददुवा भी देती है और राम मोहन के बीवी-बच्चो के लिए परेशान भी है।

स्वर्गीय सैयद अली अकबर, मूसवी की तीसरी बेटी खानदान से बग़ावत करके रेवती श्रीवास्तव से शादी कर लेती है मगर लन्दन मे पली-बढी अपनी बेटी तसनीम को एक नीग्रो से इश्क करने की इजाज़त नही देती।

श्री बाल ठाकरे 'आमची मुम्बई' कहते हैं। परन्तु 'आमची' की परिभाषा क्या है? उसकी सीमाएँ क्या हैं! और यदि बम्बई 'आमची' है तो हिन्दुस्तान का क्या होगा?

'बम्बई श्री बाल ठाकरे की है। तमिलनाडू डी एम के या अन्ना डी एम के का है। आन्ध्र श्री एन टी आर का है। कर्णाटक श्री राज-कुमार का। पजाब सन्त भिण्डरावाले का है। असम एक बड़े टेढे नामवाली सस्था का है। बनारस भगवान शकर का है। अजमेर ख्वाजा मुईनउद्दीन चिश्ती का। यू पी एटा के डाकुओ का है और राजस्थान चम्बल के डाकुओ

का। श्रीनगर डाक्टर फारुक अब्दुल्लाह का है। अमेठी मेनका गांधी या और राजीव गांधी की है—पर मुझे कोई सारे जहाँ से अच्छा जो हिन्दुस्तान है उसका पोस्टल ऐड्रेस नही बताता। यह नही बताता कि हिन्दुस्तान का दाखिल खारिज किसके नाम है। यह नही बताता कि हिन्दुस्तान किसका है। ऐ लावारिस मुल्क तू मेरा है।'

यह सम्पादकीय लिखकर अब्बास न हस्ताक्षर कर दिय। पर उसने पन्ना पलटा नही। अपने हस्ताक्षर की तरफ देखता रहा जसे यह पूछ रहा हो इस सम्पादकीय का साहित्य से क्या लेना-देना है।

अली अब्बास मूसवी उन लोगो मे था जो साहित्य और राजनीति को अलग-अलग खानो मे रखते है। मिसाल के तौर पर वह गालिब के इस शे'र को राजनीतिक अथ दन पर तैयार नही था—

लिखते रहे जुनू की हिकायत खूचकाँ
हर चन्द इसमे हाथ हमारे कलम हुए।

उसका कहना था काव्य का अथ वही है जो काव्य मे निकले। काव्य का मतलब वह टोपी नही है जो हम उसे ओढा दें। ऊपर लिखे शे'र म कोई सामाजिक या राजनीतिक चेतना ढूढ निकालना केवल प्रगतिशील लेखका की शरारत है। इसीलिए वह फज को भी साधारण कवि माना करता था क्योकि उसके खयाल मे फैज के शे'रो से वह मतलब नही निकलता जो माक्सवादी आलोचक निकालत रहते हैं। जाफरी वगरा को तो वह शायर ही नही मानता था। हाँ फिराक गोरखपुरी शायर था। जिगर हसरत, फानी आज यगाना, यह लोग शायर थे। इनम भी हसरत माहानी का दर्जा वह कम मानता था क्याकि उन्होने भी शायरी के गले मे कही कही राजनीति की रस्सी डालकर उसे घसीटा ।

शायरी दिल की भाषा बोलती है और दिल को राजनीति म कोई दिलचस्पी नही है। दिल वोटा के काटे पर मुहब्बत या वफा का तुहीं तोल

सकता। जभी तो उमन (जरींकलम सयद अली अहमद जौनपुरी स) जिगर मुरादावादी का यह शे र लिखाकर (अपने आफिस म) अपनी कुर्सी क पीछे वाली दीवार पर टाँग रखा था कि

उनका जो काम है वह अहले सियासत जानें
मेरा पग़ाम मुहब्बत है, जहाँ तक पहुँचे।

इसीलिए उसन सिफ ग़ज़लें लिखी और उन ग़ज़लो म भी सिफ उम सैयदा की बातें करता रहा जिसस उस प्यार था। शादी क पहले भी। शादी के बाद भी। यही सयदा प्रगतिशील साहित्य के खिलाफ उसकी ढाल भी थी और तलवार भी।

उसकी गजलो क दो मिसरा के बीच कहीं सैयदा के लब दिखायी देते, कहीं सयदा की आँखें कहीं उसके घन, रेशमी मगर तराशे हुए बाल

और इसीलिए उस सम्पादकीय के नीचे अपन हस्ताक्षर को वह बडे आश्चर्य से देख रहा था।

यह मुझे क्या हो रहा है ? उसन अपने आपस सवाल किया। हिन्दुस्तान मे हिन्दू मुसलमान दगे कोई पहली बार नही हो रहे है—शायद आखिरी बार भी नही हो रहे हैं। फिर ?

सवेरे के समाचारपत्रो न मरनवालो की सख्या 180 तक पहुँचा दी थी। लिखा था कि बलवाई नाम पूछने के बाद छुरे मारत हैं। उसे कृष्ण चन्द्र या अहमद अब्बास की वह कहानी याद आ गयी कि जब हत्यारे ने मरनवाल का पण्ट सरका के देखा तो पता चला कि उसन तो अपने ही धमवाले को मार डाला है। तो वह यह कहकर आग बढ गया था कि 'साला मिसटक' हो गया।

इस बलवे म हत्यारे 'मिसटक' करना नहीं चाहत थ। और बम्बई जसी महानगरी म आज हिन्दू को मुसलमान और मराठी को आमराठी से अलग करना लगभग नामुमकिन हो गया है। वहा बेचारे हत्यारे नाम न

पूछें तो और क्या करे। और शायद इसीलिए इस बार के दंगे लगभग झोपड़पट्टियों में सीमित है क्योंकि गरीबों के पास तो गुस्से और धर्म के सिवा कुछ है ही नहीं। वहाँ उन्हें अलग-अलग खानों में बाटना आसान है। इसलिए मिशटेक' के चाकमज कम हैं। अभी परसों की बात है, खुद उसने फिल्म निर्माता जानी बख्शी से हँसकर कहा था सरदारजी, यह इसलामी दाढ़ी छँटवा डालो नहीं तो मिशटेक' में मारे जाओगे! "

अब्बास ने यह बात मजाक में कही थी। पर अपने सम्पादकीय के नीचे किये हुए अपने हस्ताक्षर को घूरते हुए उसने अपने आपसे पूछा क्या मैंने वाकई जानी बख्शी से वह बात मजाक में कही थी।

अपने जीवन में पहली बार उसने एक शर्मनाक डर का अनुभव किया। यह डर हजार परोंवाले एक कीड़े की तरह उसके सारे व्यक्तित्व पर रेंग रहा था।

उसने उस सम्पादकीय के छोटे छोटे टुकड़े किये और फिर उन्हें रद्दी की टोकरी में फेंककर उसने मेज के पाये से टाँगें टिकाकर कुर्सी पिछली दीवार से टिकायी और आँखें बन्द कर ली और अपनी छोटी सी मीठी आवाज में गुनगुनाने लगा।

गोरी सोये सेज पर, डारे मुह पर केस।
चल खुसरू घर आपने साझ भई चहुदेस।।

तेरहवीं सदी दरवाजा खटखटाये बिना उसके कमरे में आ गयी।

खुसरू!

माँ हिन्दू बाप मुसलमान।

हवा का एक झोंका आया। पन्नों की तरह सदियाँ पलटीं। बीसवीं सदी।

17 मई, 84।

तसनीम, तहसीन मुजतफा

माँ मुसलमान बाप हिन्दू।

भिवण्डी, थाणे कल्याण और बम्बई में दंगे। गैर सरकारी लोगों का कहना है 1000 आदमी मारे गये। सरकार का कहना है 51। (गिनती में सिर्फ 949 लाशों का फर्क।) 50 000 आदमी बेघर। जहाँ घर थे, वहाँ खँडहर! हिन्दू खँडहर। मुसलिम खँडहर। हिन्दू आग। मुसलिम आग।

यही है सात सौ बरस की कमाई।

'क्या हो रहा है मूसवी साहब," धर्माधिकारी की आवाज पर वह चौंका। कुरसी नीचे आ गयी। आखें खुल गयी।

कितने मारे?' उसने पूछा।

मगर धर्माधिकारी हसन की जगह रो पड़ा।

'यह सब क्या हो रहा है मूसवी साहब?"

'बलवा हो रहा है भया।' अब्बास ने कहा। "तेंदूलकर के घरवाले अमरशेख के घरवालो को मार रहे हैं। यार एक बात बताव। मराठी मुसलमानो की तरफ शिवसेना का क्या रवया है। हद है कि 'इलस्ट्रेटेड वीकली' वाला ने भी श्री बाल ठाकरे से यह सवाल नही किया।"

"धर्म और आदमी में फर्क करना आखिर हम कब आयगा?" धर्माधिकारी ने पूछा।

पता नहीं।" अब्बास ने कहा। मैंने सच पूछो तो "

उसकी बात अधूरी रह गयी क्योंकि ठीक उसी वक्त जरींकलम सैयद अली अहमद जौनपुरी साप्ताहिक 'नई आवाज के पहले चार पन्ने ले के आ गये।

अब्बास वास्तव मे साप्ताहिक 'नई आवाज़' ही का सम्पादक था फिर

उसने प्रकाशको का मासिक 'अदब' प्रकाशित करने पर भी तैयार कर लिया। उसका सम्पादक भी वही बना। प्रकाशक प्रसन्न कि उन्हे डेढ तन्ख्वाह म दो सम्पादक मिल गये।

परन्तु अब्बास ने उसी दिन अपने आफिस का हुलिया बदल डाला। उस आफिस स साहित्य की सुगन्ध आने लगी। हा पत्रकारो को यह बात अच्छी नही लगी। उनका ख्याल था कि सम्पादक के दफ्तर म दुनिया-भर के तनाव का कुरसिया पर बठा, और खूटियो पर टँगा दिखायी देना चाहिए।

कन्टीन मे लतीफे बनन लगे।

एक दिन एक खबर नग पाव सडक पर भागा जा रही थी। हर राहगीर स पूछती—किसी सम्पादक का पता बताव। मुझे अपन ऊपर एक सम्पादकीय लिखवाना है। किसी न उसे अब्बास का पता बता दिया। वह धड से दरवाजा खोलकर अब्बास के आफिस मे आयी। उसन आफिस को देखा। बाली 'अब तुम जैस सम्पादक होने लगे।' यह कहकर वह खबर वही तड से गिरी और मर गयी।

जब यह लतीफा अब्बास तक पहुँचा तो उसने बडी गम्भीरता स कहा लतीफे को इतना लम्बा नही होना चाहिए कि सुननेवाला हँसने का इ तजार करते करत थक जाय। साहित्यकार और निरे पत्रकार म यही फक है

धर्माधिकारी खडा हो गया। "मैं चलता हूँ।"

'अमा बैठो।" उसन घण्टी बजायी। चपरासी आया— चाय।"

धर्माधिकारी बैठ गया।

मैं जरा एक नजर डाल लू।'

वह साप्ताहिक नई आवाज' का पहला पन्ना दखने लगा। 'नई आवाज' का तरीका यह था कि पहले पन्न पर पिछले हफ्ते की खास खास खबरें छापता था और दूसरे पन्ने पर पिछले सप्ताह के हवाले से सम्पादकीय

होता था। याकी पन्नो पर आधी से ज्यादा जगह विज्ञापनो के लिए थी। 'नामर्दी के शर्तिया इलाज' के घुटन से घुटना मिलाये हुए 'डिस्कवरी आफ इण्डिया' के नये एडीशन का इश्तिहार 'अस्लो' यूसुफ आजाद की कव्वाली के साथ ताली बजाता हुआ 'बिना आपरेशन के बवासीर और भगन्दर का इलाज।' परन्तु पत्र पत्रिकाओ की साँस की नली तो यह विज्ञापन ही है।

फिर दो पन्ने साहित्य के। दो पन्ने फिल्म और खेल-कूद के। दो रगीन पन्ने बच्चो के। दो पन्ने महिलाओ के वगैरा-वगैरा।

बच्चो के पन्ने म एक जबरदस्त परिवर्तन हुआ था। 'गब्बरसिंह' की कार्टून स्ट्रिप धीरे धीरे मर गयी थी और उसकी जगह अमिताभ की कामिक स्ट्रिप ने ले ली थी।

मगर अब्बास कभी पूरा साप्ताहिक नही देखता था। वह केवल पहले दो पन्ने देखा करता था। बाकी साप्ताहिक सहायक सम्पादक गोपीनाथ बक औरगाबादकर के हाथ म था।

पहले पन्ने पर पजाब और बम्बई के दगो के सिवा कुछ था नही!

'यार अबके अपन हफ्तावार का हिन्दुस्तान बहुत छोटा लग रहा है। पहला वरक पजाब और बम्बई म सिमटकर रह गया ह। बचपन मे एक फिल्म दखी थी कि हीरो के हाथ एक जादुई टोपी लग गयी है। वह पहन के गायब हो जाता है। लगता है हिन्दुस्तान के हाथ वही टोपी आ गयी है। गायब हुवा जा रहा है।' फिर उसने जरा झल्लाकर जरींकलम से पूछा 'यह वरक मेरे पास क्या लाय आप।"

"बक साहब तशरीफ नही लाये।"

'क्यो? फोन करवाया?"

' खराब है शायद।"

वह मुसकुरा दिया और बोला—' मीर साहब, अब आप लोग जिद करके बक साहब की शादी करवा दीजिए। इस उम्र म उनका कुवारा

रहना ठीक नही। यह वरक कमालपाशा साहब को दे दीजिए।"

जर्रीकलम चले गये।

चाय आ गयी।

'यह तुम्हारे मुख्यमन्त्री जुडिशल एनक्वायरी पर क्यो नही तैयार हो रहे हैं।"

"उसके कुर्ते पर भी खून के धब्बे है भाई, इसलिए।"

धर्माधिकारी शायर होता तो 'कुरते पर खून के धब्बे की जगह' 'लहू पुकारेगा आस्ती का' कहता। अब्बास ने सोचा।

"और आप यह बात भी न भूलिए कि अन्तुले और बाल ठाकरे मे गहरी दोस्ती है और अभी-अभी 'ताई' ने अन्तुले के खिलाफ इतना जबर-दस्त बयान दिया है।" धीरे से धर्माधिकारी की जाज फर्नान्डिसी रग फडकी।

"धीरे धीरे तुम्हारी उर्दू बहुत इम्प्रूव होती जा रही है।" धर्माधिकारी को अब्बास न दखा। "दखा धर्माधिकारी," उसने कहा। "सच पूछो तो मुझे बाल ठाकरे मे एक बात नजर आती है। वह आदमी अपने दिल की बात तो कहता है। बाकी कितने अपने दिल की बात कहते हैं। मगर तुम एक बात समझ लो कि अगर हिन्दू सिख, या हिन्दू-ईसाई या हिन्दू पारसी बलवा हो तो एकदम फुस हो जायेगे। अब भिवण्डी म जो हिन्दू सिख बलवा हुआ होता तो क्या मजा आता। बलवा तो हिन्दू-मुसलमान ही करवाया जाता है क्योकि सिफ यही एक बलवा तीन घण्टे के आग चल सकता है और नम्बर दो यह कि मुसलमान चार चार शादिएँ करता है तो बलवो के जरिए फैमिली प्लानिंग हो जाती है " वह खिलखिलाकर हँस पडा कि फोन की घण्टी बजी। उसन रिसीवर उठाया— 'अब्बास मूसवी।"

खबर सुनकर उसका चेहरा सफेद पड गया।

'अभी आता हूँ" उसने रिसीवर रख दिया।

क्या हुआ !" धर्माधिकारी ने पूछा ।
यार वक्र साहब को   तुम भी आव न यार जरा ।"

बक साहब बुरी तरह घायल थे । बहुत खून बह जाने के कारण उनका गोरा रग पीला पड गया था । आँखो म दद कम था, हैरानी ज्यादा थी ।

अरे भई बक साहब आपको किसन चाकू मार दिया ।" अब्बास न उनका वह हाथ हाथ म लेते हुए कहा जिसकी एक रग द्वारा उनके बदन म खून चढाया जा रहा था । "यह मराठा आपके घायल होन की खबर सुनते ही भागा चला आया ।"

बक साहब धर्माधिकारी की तरफ देख के मुसकराये ।

' मगर एक फायदा तो हुआ बक साहब कि बासठ बरस जीने के बाद आज आपको पता तो चल गया कि आप हिन्दू हैं । और यही हाल रहा तो किसी दिन मुझे भी पता चल ही जायेगा कि मैं मुसलमान हूँ ।"

उस लगा कि उसकी आवाज की कडवाहट से अस्पताल वाड अट गया है । उस साँस लेने म परेशानी होने लगी । वह वाड से निकल आया ।

दो मजिल नीचे सडक चल रही थी । बसें, टक्सियाँ आटोरिक्शे पोस्ट आफिस के पास एक आदमी छतरी तले बठा लोगो की तरफ से खरियत क खत लिख रहा था । एक मछेरन लाँगवाली साडी बाँधे, मछली की टोकरी उठाय चली जा रही थी । बरगद के पड के नीचे कुछ लडके बठ माग पत्ता खेल रह थे और एक कान्स्टेबिल खडा उनके खेल का तमाशा देख रहा था और बीडी पी रहा था ।

क्या इस शहर मे दगे हो रहे हैं ? यह कसा शहर है जो इन दगो से बेपरवा मजे म अपनी सडको पर घूम रहा है ? ब्लक मे फिल्मो के टिकट बेच और खरीद रहा है ।

यकायक नीचे से बल्ले-बल्ले की आवाज आयी । पान की दुकान के सामने

एक अधेड सिख एक अधेड उम्र के हिन्दू के सामने भागडा नाच रहा था। हिन्दू हँस रहा था। फिर दोनो गले मिल गये। यह जगह पजाब से कितनी दूर है?

अरे यारा नाचना गाना बन्द करो। यहा आव। यहा इमरजेंसी वाड म श्री गोपीनाथ बक औरगाबादकर घायल पडे हुए हैं

यह गोपीनाथ बक औरगाबादकर कोई बडे आदमी नही भी है और बडे आदमी हैं भी। साप्ताहिक 'नई आवाज' के सहायक सम्पादक सेकुलर-इज्म के सेनानी धार्मिक दगो के शिकार।

"मूसवी साहब!" धर्माधिकारी की आवाज ने उसे चौंका दिया। वह मुडा। धर्माधिकारी की सूरत देखते ही वह समझ गया कि वह क्या खबर लाया है।

> बक साहब मर गये।
> हिन्दू चला गया, न मुसलमा चला गया
> ईसा की जुस्तुजू मे इक इन्सा चला गया।

उसकी आखो मे आँसू आ गये।

बक साहब उसके रिश्तदार नही थे। दोस्त भी नही थे। वह महाराष्ट्रियन थे और अब्बास उत्तरप्रदेशी। वह हिंदू थे और अब्बास मुसलमान।

बक साहब से उसकी मुलाकात बम्बई ही में हुई थी। क्या खुशबूदार व्यक्तित्व था। उर्दू फारसी के शास्त्री। मराठी भक्ति साहित्य के आचार्य। माँ का नाम हीराबाई। बाप का नाम श्याम औरगाबादकर। बडे कट्टर वैष्णव!

> यह कैसा अन्धेर हुआ, क्या कहर हुआ
> अपने शहर मे आज गरीबे शहर हुआ

किसी ऐसे आदमी का हिन्दू मुसलमान दगो मे मारा जाना जीवन का

बडा अपमान है।

उनकी आँखें वसे ही खुली हुई थी और उनम अब भी वही हैरानी थी।

'इनकी लाश का वारिस कौन होगा ?" उसने धर्माधिकारी से पूछा।

'इनके दोनो भाई कनडियन नागरिक हैं। इनकी बहन चेकोस्लोवाकिया मे हैं। अपने चैक पति के साथ। एक चचा थे। वह पिछले वरस अपने बेटे के पास आस्ट्रेलिया चले गये। दो ममेरे भाई दुबई मे है। सब इन्हें अपने पास बुलाते थे पर यह अपनी माशूका को छोडकर जाने पर तैयार न थे।"

माशूका !" धर्माधिकारी हैरान हुआ।

अब्बास ने बडी उदासी से सर हिलाया—"हा, माशूका बम्बई !"

सन्नाटा।

नीचे सडक उसी तरह चल रही थी। अस्पताल मे डाक्टर और नर्सें उसी तरह मरीजा स वेतअल्लुक थी और हर मरीज अपने-अपने दद के साथ अकेला था।

"पोस्टमाटम होगा।" धर्माधिकारी न कहा।

अब्बास की समझ मे न आया कि पोस्टमाटम क्यो होगा।

'उनकी मौत की वजह तो मालूम है भई।"

"फिर भी।" धर्माधिकारी ने कहा— 'कायदा है।"

"तो डाक्टर से कहो न यार कि वक साहब का दिल चीरकर दूर तक देखे। देखना चाहिए ना कि उसमे स क्या-क्या निकलता है। शिकवे-शिकायतें हिकायतें प्यार वफा, बेवफाई हजारो ख्वाहिशें ऐसी कि हर ख्वाहिश पे दम निकले "

जन्म 17 मई सन् 24 मृत्यु 20 मई सन 84

साठ बरस तीन दिन की जिन्दगी और बयालीस बरस तीन दिन की तनहाई।

वक साहब दस बरस की उम्र म औरगाबाद से भागकर बम्बई आये थे। फिल्म के शौक मे बस वह दिन और आज का दिन वह लौटकर औरगाबाद नही गय।

जेब मे नयी नयी जवानी लिये वह बम्बई आये और बम्बई को देखते ही उसपर आशिक हो गय। यह बम्बई टाकीज मिनरवा, रजीत मूवीटोन का युग था। उन्होने फरेबी दुनिया उर्फ चितचोर मे एक छोटा-सा रोल भी किया ।

उस बम्बई की बात ही और थी मूसवी साहब! मेरी उस बम्बई को तो यह नयी बम्बई खा गयी। लोग घरो मे रहते थे। यह चोपड-पट्टिया तो थी ही नही। फरेबी दुनिया के डायलाग मुशी बेताब लखनवी लिख रहे थ, बिचारे ज्यादा पढे लिखे नही थे एक डायलाग पर मैंने कहा मुशीजी! कहा इसे यू कर लें। मुशीजी ने कहा हजरत आप बडे बुकरात हैं तो खुदी लिख लीजिए—प्रोड्यूसर शापूरजी ने यह सुन लिया। बोले—क्या बात है। मुशीजी न कहा—साहबजाद मेरे लिखे मे मीन-मेख कर रहे है। कै आमदी कै परी सुदी। बात आयी गयी हुई। शाम को शापूर सेठ न अपन आफिस मे बुलवाया। कम्पनी की हीरोइन कान्ता आपटे सामने बैठी हुई थी। डाइरेक्टर हृदयनाथ पालेकर भी एक कुरसी पर उक्डू बैठे पासिंग शो सिगरेट पी रहे थे। उन्होन मुझे घूरकर दखा। मैं समझा कि नौकरी गयी और तब शापूर सेठ ने कहा कि यह वही लडका है तोमेरा दम निकल गया। कान्ता आपटे खिला खिला के हँस पडी और मराठी म उर्दू वाली कि यह क्या डायलाग लिखगा। अब मर कान खडे हुए क्योकि कान्ता आपटे शापूर सेठ की रखल भी थी। शापूर सेठ बाले, कि मुशी वेताब का डायलाग लखनऊ की बास मारता है और हमारा सब्जेक्ट कलकत्ते का है । फिर मुझस बोले—तुम्हारा नाम क्या है। गोपीनाथ। डाइरेक्टर हृदयनाथ न कहा—नही चलेगा। कोई तखल्लुस लगाव! मैंन कहा मै शायरी नही करता।

वह बोले—एक अच्छा रहेगा। गोपीनाथ बक। मुशी गोपीनाथ बक। और मया में जो साइड रोल कर रहा था वह किसी और को दे दिया गया और मैं मुशी बक बन के फरेबी दुनिया' का डायलाग राइटर बन गया। मुशी बेताब अलग कर दिए गये। मुशीजी चले गये और तब मुझे पता चला कि सात कँवारी बेटियों के बाप हैं। मैं शाम को सीधा उनके घर गया। वह दादर की यतीमखाना बिल्डिंग में रहा करते थे उनके कमरे में एक छोटा सा लखनऊ बसा हुआ था। मैं पहुँचा तो वह तख्त पर लेटे अनीस का मरसिया गुनगुना रहे थे। आज शब्बीर पे क्या आलम तनहाई है मैंने आदाब किया। उठ बैठे। बड़े तपाक बड़ी मुहब्बत से मिले। चाय पिलायी। मैं शर्म के मारे मरा जा रहा हूँ कि मेरी वजह से यह आदमी बेकार हुआ और मुझे चने की दाल का हलवा खिला रहा है। मूग की पीठी खिला रहा है। और एक बार भी यह बात न निकली कि तेरी वजह से बेरोजगार हुआ। ये सात कँवारी बेटियाँ लेकर कहाँ जाऊँ? जैसे-तैसे करके थोड़ी देर बैठा। रात-भर नींद न आयी। सवेरे ठीक साढ़े-नौ बजे शापूर सेठ के आफिस गया। इस्तीफा दे दिया—सेठजी हैरान! बहुत समझाया कि साला क्या करता है—फिर बहुत डाँटा। घण्टी बजाई। चपरासी आया। बोले—अभी जा और मुशी बेताब को बुला ला। और यूँ मेरा फिल्मी करियर शुरू होने से पहले खतम हो गया पर बक का दुमछल्ला लगा रह गया। शायरी कभी की नहीं। तखल्लुस का झण्डा लहरा रहा हूँ।' और फिर ताजा खिले हुए चमेली के फूल जैसी उनकी वह नर्म, उजली और भीनी हँसी। 'आपको यह बातें यूँ बता रहा हूँ कि मेरे मरने के बाद एक इदारिया (सम्पादकीय) तो जरूर ही लिखेंगे आप।

और अब्बास ने मुशी गोपीनाथ बक औरंगाबादकर की वह खुली हुई हैरान आँखें बन्द कर दीं, जो उससे पूछ रही थीं कि हीराबाई और अलाउद्दीन खाँ का बेटा यूँ क्यों मर रहा है।

अब्बास को लगा कि जिन्दगी भर दूसरो के लिए जीनेवाले की मौत को यू रायगा तो नही होना चाहिए।

वह वष्णव थे क्योकि उनकी माँ अलाउद्दीन खाँ की पत्नी बनन के बाद भी वष्णव रही। वह हनफी मुसलमान भी हो सकते थे कि अलाउद्दीन खाँ हनफी थे उनसे न कभी हीराबाई ने वैष्णव होने को कहा न कभी अलाउद्दीन खाँ न हनफी होन को। वह तो अपनी माँ के भजनो की उँगली पकड पकड वष्णव माग की ओर चले गये थे। मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोय।

ज माष्टमी पर वह बा द्रा (ईस्ट) के अपने क्वाटर मे हरी गेरुई झण्डियाँ लगाते।

यह क्वाटर हाउसिंग वोड ने क्लास फोर सरकारी कमचारियो के लिए बनवाया है जिस कमचारी किराय पर उठाते रहते हैं। वह एक भगी के किरायेदार थे। बूढा भगी अपनी भगन के साथ वही रहता था। रात को दारू पीकर पत्नी से लडता था। पत्नी भी खूब खूब गालियाँ देती थी। पर यही पति पत्नी उनकी देखभाल भी करते थे। पत्नी खाना पकाती, झाड़-बुहारू करती। उनकी किताबो के खजाने पर साँप की तरह बैठी रहती। एक दिन उसका पति दारू के लिए उनकी लुगाते किशोरी' तौल के भाव ढाई रुपये म वेच आया था। वर्क साहब तभी से उसे दारू पीने पर सवेरे की चाय के साथ डाँटा करते थे। पर ज माष्टमी पर वह खुद उसे दारू पिलाते और मौलाना हसरत मोहानी की गजल सुनाते और उन गजलो का अथ समझाते वैसे तो वह मीराबाई के आशिक थे पर ज माष्टमी के दिन वह सिर्फ हसरत मोहानी की गजलें गुनगुनाया करते थे।

एक दिन सयदा स बोले 'अरे बेगम मूसवी "

सैयदा न हमेशा की तरह उनकी बात काटते हुए कहा—"भई बक साहब आप मुझे सयदा कहा कीजिए ,

सयदा और बक साहब मे हमेशा यू ही चोचें लडा करती थी।

"बात तो सुनिए !" वह मुसकुराकर बोले। ' मौलाना हसरत अन्दर स हिन्दू हो चुके थे।"

क्या कह रहे हैं आप !" मिसेज शकीला रजा चमकी। यह शकीला रजा पडोसिन थी। अजुमने इस्लाम गर्ल्स हाई-स्कूल की लाइब्रेरियन।

"तो वह हर जन्माष्टमी पर वृन्दावन क्या जाते थे ?" बक्र साहब ने सवाल किया।

नया-नया कलर टी वी चला था। माजिद ने टी वी चला दिया। 'छाया गीत' के प्रोग्राम का वक्त था

वह घर पहुँचा तो टेप रिकार्डर पर साबिरी ब्रदस की कव्वाली चल रही थी।

मैं का जानू राम तोरा गोरख धन्धा

टी वी पर कोई सडा हुआ प्रोग्राम चल रहा था इसलिए उसकी आवाज बन्द कर दी गयी थी।

सैयदा न उसे देखते ही कहा "हैं हैं तुमने जरा देर कर दी। अभी अभी टी वी पर बक साहब का ड्रामा आ रहा था। हँसते हँसते मेरे तो पेट मे बल पड गय।"

वह आज मार डाले गय।" उसने कहा। सयदा का मुह खुले-का खुला रह गया। —' राम मोहन जरा चाय लाव।' राम मोहन के बच्चे के रोने की आवाज आने लगी। उसने सयदा की तरफ देखा।

' मैं आज जाकर उसके बीबी बच्चा को ले आयी।" सयदा न कहा, और फिर वह रोने लगी। अब्बास जानता था कि वह बक साहब पर रो

रही है इसीलिए उसने उसे रोने दिया क्योंकि बर्क साहब पर रोनेवाला कोई और था ही नही।

वह वही कालीन पर लेट गया। चुपचाप छत की तरफ देखने लगा। और फिर उसने अपने ब्रीफकेस से कागज और कलम निकाला और सम्पादकीय लिखने बैठ गया।

या अल्लाह यह कैसे रिश्ते हैं बम्बई मे। हिन्दू मुस्लिम फसाद हो रहा है और स्वर्गीय सयद अमीर अली की बडी बेटी सैयदा मूसवी हिन्दुओ को गारत होने की बददुआ भी दे रही है और मुशी गोपीनाथ बर्क औरगाबादकर की मौत पर रो भी रही है

और टेप रिकाडर पर पाकिस्तान के गुलाम फरीद साबिरी की कव्वाली चल रही थी।

मैं का जानू राम तोरा गोरख धन्धा

आमची मुम्बई

दिलीप कुमार, राज बब्बर, सुनील दत्त, ख्वाजा अहमद अब्बास, तन्दूलकर परछाइयाँ

यह सब टी वी पर आये। किसी ने मुश्किल भाषा मे सन्देसा दिया। किसी ने सरल भाषा मे। पर किसी के पास कोई सन्देसा था ही नही। सब अपनी-अपनी भाषा म अल्लामा इकबाल का वही घिसा पिटा शे'र सुना रहे थे—

मजहब नही सिखाता आपस म बर रखना
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दूस्ता हमारा

अरे भाई इन लीखो को छोडो। यह न बताव कि आपस मे बैर रखना कौन नही सिखाता। यह बताव कि आपस मे बैर रखना कौन सिखा रहा है। किसकी बात मानें? गुरु नानक की या सन्त जरनैल सिंह भिण्डरावाले की? मुहम्मद की या बनातवाला की! श्रीकृष्ण की या देवरस की? तुकाराम की या बाल ठाकरे की?

दिलीप कुमार राज्यपाल से मिले। वह दगा पीडितो की मदद के लिए फिल्म स्टारों का एक जुलूस निकालना चाहते हैं।

यार मूसवी भाई" धर्माधिकारी ने कहा। बलवा-अलवा हो जाये तो

कुछ लोग कितने बिजी हो जाते हैं ना। दिलीप कुमार, जी पी सिप्पी ''

'मैंने तो सुना है,'' अब्बास ने कहा कि ''जी पी सिप्पी ने प्रधानमन्त्री को एक तार तक दे दिया है कि सारी फिल्म इण्डस्ट्री उनके पीछे है।''

''उस तार का पैसा प्रोडयूसस काउन्सिल ने दिया होगा। लगता है लोग दुघटनाओं के इन्तजार म रहते हैं कि वह घटे और यह लीडर बन जायें। पता है आज फिल्म लेखक सघ की एक मीटिंग मे जुलूस की बात निकली। मैंने कहा, जुलूस क्यो ? पाच लाख से ऊपर लेनेवाला हर आदमी दो या चार चार लाख ब्लैक का निकाले, रिलीफ सैण्टर खोले जायें। उन सैण्टरो पर दिलीप कुमार अमिताभ बच्चन सायरा बानो, रखा गणेशन, शबाना आजमी, बी आर चोपडा, जावेद अख्तर, आनन्द बख्शी लक्ष्मीकान्त, प्यारेलाल आदि ड्यूटी दें। अरे भई जिनके घर जले, जो घायल हुए, जो मारे गये—वह ब्लैक मे टिकट लेकर फिल्में देखनेवाले ही तो थे ''

पता नही वह और क्या-क्या कहता पर जर्नलिस्ट सैयद अली अहमद जौनपुरी के आ जाने से उसकी तकरीर आधी रह गयी।

'क्या बात है मीर साहब ?'' अब्बास ने पूछा।

अभी-अभी घर म से फोन करवाया कि हमारे इलाके म पुलिस के आ जाने से घबराहट फैल गयी है। अब पुलिस म तो हम निहत्थे नही लड सकते ना मूसवी साहब ? ' यह सवाल उन्होंने धर्माधिकारी की तरफ देख के किया।

' यार मूसवी साहब, पुलिस का ऐटिटयूड तो सचमुच बडा शेमफुल है। इन बलवों में अभी तक पुलिस की गोली से सिर्फ मुसलमान मरे हैं।'' धर्माधिकारी ने कहा।

' अल्ला आपको खुश रक्खे धर्माधिकारी साहब आपने मेरे मुह की बात छीन ली।''

''जी नही '' धर्माधिकारी ने बडी कडवाहट से कहा। यह बात मैं घर

से अपने मुह म रखकर लाया था।'

अब्बास हँस पडा।

नही बाई गाड मूसवी साहब।" धर्माधिकारी न झल्लाकर कहा—"अगर पुलिस मुसलमानो का मार रही है तो यह बात मेरे सामन क्यो नही कही जा सकती "

तुम मराठे इतने टची क्यो होते हो ?" अब्बास ने पूछा। "अरे भैया यू पी म भी पुलिस मुसलमाना को ही मारती है। यहाँ पुलिस म मराठे ज्यादा हैं। जो कर्णाटक महाराष्ट्र की सीमा पर, कर्णाटक के ब्राह्मणों और मराठो म लडाई होगी तो वह कर्णाटक के ब्राह्मणो को भी मारेगी। उत्तर प्रदेश की पी ए सी म कान्यकुब्ज ब्राह्मण ज्यादा हैं तो वह ठाकुरो, हरिजना और मुसलमानो को मारती है। पुलिस म भी हमी-तुमी होते हैं ना। हम अपने मुहल्लो अपन गाँवो अपन कस्बो के सारे डर, वहाँ की सारी नफरतें सारे तनाव लेकर पुलिस क्वाटस में जाते है। पुलिस में मुसलमान ज्यादा होंगे ता पुलिस हिन्दुओं का मारेगी "

क्या आपपुलिस ब्रुटेलिटी को और उसकी साम्प्रदायिकता को डिफेण्ड कर रहे हैं ?"

वह अधसत्य' म किया गया था।" अब्बास ने कहा। 'और तुमने उस फिल्म की तारीफ म तीन पेज का रिव्यु लिखा। मैं इस सरकार के खिलाफ इसलिए नही हूँ कि इसकी पुलिस हिन्दू-मुसलिम झगडो म हिन्दू और ब्राह्मण ठाकुर और हरिजन झगडो म ब्राह्मण या ठाकुर हो जाती है। मैं इस सरकार के खिलाफ इसलिए हू कि यह साम्प्रदायिकता को हवा देती है। उसस फायदा उठाती है प्रोनोट की तरह चुनावो म उसे भुनाती है ।"

जर्नलिस्ट इस दोतरफा फायरिंग मे फसे कभी इसका और कभी उसका मुह देख रहे थ।

'हिन्दू मुसलमान दगा मेरी समझ मे आता है। अब्बास न कहा,

' लेकिन मराठा मुसलमान झगडा मेरी समझ मे नही आता। अगर यह बम्बई मराठो की है ता जितनी हिन्दू मराठो की है, उतनी ही मुसलमान मराठो की है, उतनी ही ईसाई मराठो की है ?"

जनाब मैं यह अर्ज करने आया था कि " जरींक्लम हक्लाये।

"अरे हाँ," उसने कहा—"फरमाइये !"

"आज अगर जरा पहले छुटटी मिल जाती ता मैं बाल बच्चो को किसी महफूज जगह पर ले जाता है।"

"महफूज जगह है कहा जरींक्लम साहब," झल्लाहट मे धर्माधिकारी फ' और 'ज' कि बिन्दियाँ निगल गया। सारे हिन्दुस्तान मे मुसलमान माईनॉरिटी मे हैं।" वह मूसवी की तरफ मुडा। जरा माइनारिटी को उर्द म ट्रासलेट कर दीजिए ?"

"अकलियत !" अब्बास न कहा।

'हाँ। अक्लियत !" धर्माधिकारी न कहा। ' मुसलमान यहाँ अक्लियत म है। अगर आपक बच्चे बान्द्रा ईस्ट मे महफूज नही है तो फिर सारे हिन्दुस्तान म महफूज नही है। बान्द्रा इस्ट स निकलना हो तो फिर पाकिस्तान जाइए। पर आप तो शीआ हैं। आप ता पाकिस्तान मे भी महफूज नही है। वहा सुन्नी मार डालेंगे।" वह फिर मूसवी की तरफ मुडा। "साला यह देश अजीब हो रहा है। अमतसर म हिन्दू महफूज नही। जगाधरी मे सिख महफूज नही और बान्द्रा ईस्ट मे यह जरींकलम मीर अली अहमद जौनपुरी महफूज नही।' उसकी सारी बिन्दियाँ लौट आयी। "इस देश का हर आदमी इस देश म कही-न-कही खतर म हे।

'आप मेरे खयाल म अभी चले जाइए।" अब्बास ने कहा।

' हाँ जाइए।" धर्माधिकारी ने किसी लडाका औरत की तरह कोसने के अन्दाज मे कहा— 'और जाकर महफूज हा जाइए।"

जरींकलम वहाँ मे चुपचाप निकल लिये। वह धर्माधिकारी की देश-

भक्त झल्लाहट का जी खुश करने के लिए अपने बाल-बच्चों की जान खतरे मे नही डाल सकते थे।

जरीकलम मीर अली अहमद जौनपुरी के पुरखे वास्तव म मराठे थ। मातृभाषा मराठी। धम कट्टर हिन्दू। फारसी के रसिया। तलवार के धनी और पेशे के सिपाही। जिस राजा की सेना म नौकरी की उसी की तरफ से लडने लगे। कुछ लोग क्षत्रपति शिवाजी के साथ गोलकुण्डे के कुतुबशाहियो और दिल्ली के मगलों के खिलाफ लडे, मरे, हारे और जीते भी थे।

शिवाजी महाराज जब गिरफ्तार करके आगरा ले जाये गये तो तुकाराम मिराजकर भी आगरे पहुँचे। वह स्काउटिंग के लिए भेजे गये थे क्योंकि वह मुगलो की दरबारी भाषा फारसी, अच्छी तरह जानते थे।

छत्रपति शिवाजी तो आगरे से निकल गये परन्तु तुकाराम मिराजकर आगरे मे फँस गये। उन्ह एक जन्नत बीबी स प्यार हो गया।

यह जन्नत बीबी उस सराय की भटियारी थी जिसम तुकाराम, औलाद अली खाँ बनकर ठहरे हुए थ।

इस जन्नत भटियारी का हुस्न अच्छे चाकू की तरह तज और नुकीला था। उनके दिल पर लगा और उतरता चला गया। मुझे इसका पता उस फारसी मसनवी स चला जो तुकाराम न जन्नत भटियारी पर लिखी थी।

वह मसनवी तो अब कही मिलती नही मगर उसके उदू अनुवाद की एक फटी पुरानी कापी राजा साहब मितूपुर जिला फैजाबाद के पुस्तकालय म थी। मितूपुर के राजा साहबान क हाथ यह मसनवी कहाँ लगी इसका पता नही चलता।

अनुवादक का नाम मुहम्मद अली जौहर खाँ लखनवी लिखा है। शुरू म अल्लाह रसूल की तारीफ है। फिर कवि की जीवनी और खानदान का हल्का-सा इतिहास। और उसम यह बात बड गुरूर से लिखी गयी है कि

अनुवादक उस तुकाराम की औलाद है जिसकी तलवार के पानी का मजा दिल्ली की शाही फौज को बरसों याद रहा।

आब शमशीर जिसका था गहरा।
उसमें डूबा गुरूर मुगलों का।।

कवि असली फारसी मसनवी का नाम 'मसनवी फस्ले इश्क' बताता है। और इसीलिए उसने अपने अनुवाद का मसनवी फस्ले इश्क उर्फ किस्सयं इश्के-तुकारामो-जन्नत भटिहारी' कहा।

तुकाराम, जो औरंगजेब के आगरे में औलाद अली खाँ के नाम से जाने गये, अपनी मसनवी 'फस्ले इश्क' को यूं आरम्भ करते हैं।

ऐ कलम बाध आज ऐसी हवा
इश्के जन्नत में जन्नती हो जा
शह 'वशम्स' वह कमर तलअत
पूछिए हमसे कौन थी जन्नत
जादु - ए - हुस्न रहमते बारी
आगरे में थी एक भटिहारी

इस जन्नत भटियारिन को भी यह नीली आँखोंवाला पठान पसन्द आया। वह उसे देखकर मुसकुराने लगी। उसके लिए सिंगार करने लगी और यह बात तफज्जुल भटियार ने देख ली।

उसने एक रात तुकाराम के सीने पर खंजर रख दिया कि या मेरी बेटी से शादी कर या मरने को तयार हो जा।

मसनवी 'दास्तान इश्क-तुकारामो-जन्नत भटिहारी' में इसका जिक्र यूं आया है

उसने जब बात ऐसी फरमायी
मेरी माँगी मुराद बर आयी

यह मुहम्मद अली जौहर कोई अच्छे शायर तो नहीं थे पर लखनऊ के

अच्छे नचाबन्दों और सोजख्वानो में जरूर गिने जाते थे, चुनांचे मुहरम में उनकी मांग बढ़ जाया करती थी और एक साल तो उन्हें छतर मंजिल की एक ऐसी मजलिस में भी मर्सिया पढ़ने का मौका मिला जिसमे खुद जान आलम वाजिद अली शाह शरीक थे।

जौहर साहब ने राग झिझोटी म मोज पढ़ी और जाने आलम भी बहुत रोये।

कहने का मतलब यह है कि मसनवी के अनुवाद मे उन्होंने कोई कमाल नही दिखाया। मगर इस सिलसिले म हम उनसे कोई शिकायत भी नहीं कर सकते क्योंकि मसनवी और नचाबन्दी म बडा फर्क होता है और वह शायर नही थे, नैचाबन्द ही थे। परन्तु बरीकलम के खानदान के इतिहास के लिए मसनवी इश्के-तुकारामो-जन्नत भटिहारी' के महत्व से इन्कार नही किया जा सकता। तो बात यूं चली कि

उसने जब बात ऐसी फरमायी।
मेरी मांगी मुराद बर आयी॥

एक थे मौलवी अली शदा जिसने हम दोनो का निकाह पढ़ा आदि-आदि। परन्तु मिलन की रात के बयान के अनुवाद मे जौहर साहब ने जरूर शायरी का कमाल दिखाया। शायद इसका कारण यह हो कि यह बयान बहुत खुला हुआ है और उस युग के लखनऊ के मिजाज से मेल खाता है

हाय उस रात क्या मजा आया।
हाथ पकड़ा पलँग पर लाया॥
कहने सुनने स पहले मान गयी।
फिर य चिल्ला के बोली जान गयी॥

इन दोनो शे'रो के आखिरी तीन मिसरे न जाने किस तरह नवाब मिर्जा शौक की मसनवी 'बहारे इश्क' म पहुँच गये हैं और उन्ही के मान लिये गये हैं।

लेकिन यही से यह प्रेम कथा एक अजीब मोड लेती है।

यह दोनो रात भर एक दूसरे मे गुम रहे। पर सवेरे से जरा पहले जन्नत ने देख लिया कि वह मुसलमान नही है।

पहले विस्तर पे एक तरफ हो ली।
थामकर मेरा कुफ्र फिर बोली॥
कैसा इसलाम तेरा आखिर है।
यह किलीदे वफा तो काफिर है॥

अब तो तुकाराम को सच बोलना ही पडा और सच सुनकर वह नेकबक्त सन्नाटे म आ गयी। बोली कि जब लोगो को यह पता चलेगा कि तू हिन्दू है तो मेरी नाक कट जायेगी। फिर दोनो गले मिलकर दो दिन और दो रात रोते रहे।

तुकाराम की समस्या यह थी कि उन्हे जन्नत भटियारी की नाक ही तो सबसे ज्यादा पसन्द थी। वही कट गयी तो जीने का मजा क्या रह जायेगा।

न वह एक मुसलमान पत्नी को लेकर अपने गांव जा सकते थे और न जन्नत आगरे को यह बता सकती थी कि उसका पति एक मराठा हिन्दू है।

परन्तु यह बात उन दोनो मे से किसी के ध्यान म न आयी कि जन्नत हिन्दू या तुकाराम मुसलमान हो जाये। खैर जन्नत के हिन्दू होने का सवाल तो यू भी नही उठता था कि तब तक आर्य समाज के आन्दोलन की तरफ किसी का ध्यान भी नही गया था।

तो दोनो ने आपस मे यह ठहराई कि तुकाराम हिन्दू ही रहेगे परन्तु औलाद अली खा ही कहलायेंगे और यह कि अब से पलँग पर उन दोनो के बीच तुकाराम की तलवार रहा करेगी। वह दोनो जिन्दगी भर अपने इस फैसले पर कायम रहे। इसीलिए उनके यहा सिर्फ एक बेटा पैदा हो सका। जिसका नाम करीमुद्दीन खा रक्खा गया और जो भैराज पुकारा गया और

यू तुकाराम न 'मिराजकर' को किसी-न किसी तरह अपने बेटे के नाम का हिस्सा बना ही दिया। 'मिराजकर' का पहला टुकडा एक मात्रा के परिवतन के साथ मेराज बना और करीमुद्दीन में 'कर' आ गया और उनकी मराठा आत्मा सन्तुष्ट हो गयी।

जन्नत भटियारी बडी कट्टर शीआ मुसलमान थी। जबरदस्त ताजियेदारी करती थी। हर जुमेरात को शहीदे सालिस की कब्र पर फातिहा पढने जाती थी जो सरकार से बगावत भी समझा जा सकता था क्योंकि खुद औरगजेब के हुक्म स उस ईरानी शाआ आचाय को सूली पर चढाया गया था।

तो जब सुहाग का पहला मुहरम आया और इमामबाडा सजा तो तुकाराम उर्फ औलाद अली खा न अलमो और तुबत पर ठोस चाँदी की एक तलवार चढायी। जन्नत ने कहा कि यह मौला मुशकिकुशा की तलवार है हालाँकि उसे पता था कि यह शिवाजी की तलवार भवानी की नकल है।

इस खानदान के इमामबाडो म वह तलवार अब भी उसी तरह चढायी जाती है। हालाकि घटत घटते वह तलवार अब चादी का खिलाल बन चुकी है। बहरहाल किस्सा कोताह यह कि जब मेराज करीमुद्दीन खाँ की जिन्दगी का पहला मुहरम आया तो उन्हें पटको क साथ साथ उस तलवार की हवा भी दी गयी और यू वह अलमो और तलवार की छाँव म जवान हुए और कोल (अलीगढ) के मुहल्ल ए-अफगानान म उनकी शादी हो गयी, जिसके नतीजे म वह चार बेटों और सात बेटियो के बाप बने और उनके तीसरे बेटे नूरुल्लाह खाँ के पोते जहाँदाद खाँ की शादी जौनपुर के एक सैयद खानदान मे हो गयी और वह घर जँवाई बनकर जौनपुर चले गये जहाँ उनके ससुर का यह गवारा न हुआ कि लोगो को यह मालम हो कि उनका दामाद पठान है इसीलिए उन्होंने जहाँदार खाँ को मीर जहाँदार अली खाँ कह दिया और खान' का गवालियर दरबार का खिताब बता दिया। और

यू तुकाराम मिराजकर क खानदान का एक सिलसिला सयद हो गया और जरींकलम मीर अहमद अली जौनपुरी उसी सिलसिले की एक कडी थे परन्तु वह अपने खानदान के इतिहास स परिचित नही थे। और इसीलिए कार्यालय स अपन घर जाते समय वह बिलकुल अकले थे क्योकि उन्हे तो यह पता था नही कि वह तुकाराम मिराजकर के पडपोते है। इसलिए अगर बम्बई, कल्याण, थाण भिवण्डी—य सारी जगह मराठो की है तो उनकी भी है। उन्ह तो शिवाजी पाक म होनेवाल एक हिन्दू मराठी नेता का भाषण याद आ रहा था

यह मुसलमान कसर है और कसर का सिफ एक इलाज है—काट कर फक दिया जाय। यह मुसलमान कैसर हैं ,

खुद जरींकलम की मा कसर म मरी थी। उनके कैसर का आपरेशन भी किया गया था। पर मौत बरहक है। इसलिए अगर मुसलमान कसर है तब तो फिर हिन्दुस्तान की जान अल्लाह ही बचाये ।

जरींकलम यह सोचकर अन्दर ही-अन्दर काँप गय।

वह तो सन् 47 म पाकिस्तान नही गये कि पजाबवाले 'उसने जाना है', बोलते हैं। वह अपनी जबान खराब करने वहाँ क्या जायें। फिर बनारस के लँगडे आम रामपुर के समर बहिश्त लखनऊ क म्सहरी अहमद हुसन दिलदार हुसन की तम्बाकू नख्खास की बालाई चौक क पान गरज कि जिन्दगी के सारे एहसानो को भुलाकर वह कस चले जाते। उनके पिता अली कबर जौनपुरी छपरा के बलवो म मारे गय। उनकी बहन कनीज फात्मा कलकत्ते के दगो म ऐसी गायब हुई कि फिर मिली ही नही वह फिर भी पाकिस्तान नही गय। और एक आदमी छत्रपति शिवाजी महाराज की मूर्ति क नीच खडा छत्रपति शिवाजी महाराज की सेना के एक सिपाही तुकाराम मिराजकर के पडपोते के बारे म यह कह रहा है कि वह कैसर है और उस काट के फेंक देना चाहिए

प्रश्न यह है कि जरींकलम मीर अली अहमद जौनपुरी पुत्र मीर साहबे आलम जौनपुरी पुत्र सैयद जहाँदार खाँ फैजाबादी, पुत्र करीमउद्दीन खाँ पुत्र तुकाराम मिराजकर कहाँ जाय ?

कथाकार ने जरींक्लम के खानदान के इतिहास से यह सवाल किया।

इतिहास चुप रहा क्योंकि उसमें इस सवाल का जवाब देने की हिम्मत नही थी। और इतिहास इसलिए भी चुप रहा कि वह जानता था कि श्री बलराज मधोक हफ्ते, दस दिन के बाद क्या बयान देनेवाले हैं।

मद्रास जून 10 (पी टी आई) भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष प्रोफेसर बलराज मधोक ने आज यह कहा कि वह जुलाई में हिन्दुओं की एक नयी पार्टी बनाने जा रहे हैं जो कांग्रेस का जवाब होगी और जिसकी कोख से राष्ट्रीयता का सूर्य उदय होगा।

उन्होंने पत्रकारों से कहा कि नयी पार्टी तमाम हिन्दुस्तानियों के लिए एक सिविल कोड की लड़ाई लड़ेगी और यह माँग करेगी कि कानून द्वारा हिन्दुओं को मुसलमान और ईसाई होने से रोक दिया जाय क्योंकि मुसलमान या ईसाई होने से राष्ट्रीयता बदल जाती है

मतलब यह कि तुकाराम मिराजकर के पड़पोते जरींक्लम मीर अली अहमद जौनपुरी हिन्दुस्तानी नहीं हैं।

तो फिर जरींक्लम कौन हैं ? कथाकार ने इतिहास से फिर पूछा परन्तु इतिहास तक उसकी आवाज न पहुँची क्योंकि उसकी आवाज खुशी के उस शोर में दब गयी जो मुसलमानों के झोपड़ों को जलता देखकर बम्बई के एक क्षेत्र के फ्लैट निवासी कर रहे थे। उसकी आवाज पुलिस की गोलियों की उन आवाजों में दब गयी जो मुसलमानों का सीना तलाश कर रही थीं।

इसलिए जब कथाकार को इतिहास ने कोई जवाब नहीं दिया तो वह चुपचाप जरींकलम के साथ लग लिया जो अपने घर की तरफ जा रहे थे।

जैसे जैसे उनका घर पास आता गया वैसे वसे सडक पर और गलिया म पत्थर और टूटी हुई वोतलो के टुकडे ज्यादा दिखायी देने लगे। एक जगह सडक गीली थी। वस तेज चल रही थी पर जरींकलम ने देखा कि वह गीला धब्बा लाल था जो धीरे धीरे काला पड रहा था।

जरींकलम घवराकर दूसरी तरफ दखने लगे।

वस भरी हुई थी। हर मुसाफिर के चेहरे के डर ने उसके धम को ढँक रखा था ।

जरींकलम ने समय बिताने के लिए यह सोचना शुरू किया कि मुसाफिरा मे कौन हिन्दू कौन मुसलमान और कौन ईसाई है।

ड्राइवर तो सिख था। गुरुवाणी गा रहा था। शायद अपने डर को छिपाने के लिए खालिस्तान। सन्त जरनैल सिह भिडरावाला। हरमन्दिर साहब। अकाल तख्त साहब स्वण मन्दिर। ग्रन्थ साहब का अखण्ड पाठ। खून, लाशें बमो के धमाके गोलिया की सनसनाहट वह डर जो पजाव के गली कूचो मे परछाइयो की तरह साथ लगा हुआ है खून के धब्बे धुलेंगे कितनी बरसातो के बाद

"बजार म तो आग लगेला है भाई !" एक आवाज आयी।

जरींकलम न बोलनवाले की तरफ देखा। सूरत से पता नही चल रहा था कि वह हिन्दू है या मुसलमान। भाषा भी एक ही थी। परेशानी भी एक ही थी। खुद जरींकलम बाजार म लगी हुई आग मे जल रहे थे।

आटा 5 रुपय किलो।

तुआर (अरहर) की दाल 8 रुपय किलो।

डालडा 18 रुपय 40 पैसे किलो।

चावल 3 रुपय 40 पैसे से 12 रुपय किलो तक।

शकर 4 रुपय 80 पस किलो।

आटा 4 रुपये किलो।

हापूस (अलफासो आम) 70 रुपये दजन।

गोश्त 24 रुपया किलो।

हद तो यह है कि पिछले बरस अम्मा के कफन दफन पर सात सौ उठ गये, जबकि दस बरस पहले अब्बा के कफन दफन पर सवा तीन सौ उठे थे। जिया जा नही रहा है और मरने की हिम्मत नही पड रही है। तो फिर आदमी करे क्या ?

बस एक स्टाप पर रुकी। कुछ मुसाफिर उतरे। कुछ चढ़े।

"शकील भाई सलामालेकुम !"

ज़रींकलम ने पिछले दरवाज़े की तरफ देखा। एक हट्टा-कट्टा जवान आदमी बस के अन्दर आ रहा था।

"अरे भई बद्रुज्जमा, सुना कि चीता कैम्प पर फिर हमला हुआ ?"

"अरे शकील भाई दादा पाटिल दिन भर के वास्ते अपनी पुलिस हटा लें तो हमला गाँड मे घुसेड के हलक से निकाल लें।" उसने उस मुसाफिर की तरफ़ घूर के देखते हुए कहा जो एक कोने म बठा महाराष्ट्र टाइम्स पढ रहा था, और जिसके बारे मे बद्रुज्जमा को यह नही मालूम था कि उसने अपनी झोपडी मे तीन मुसलमानो को छिपा रखा है।

"अरे बेटा, जान तो जान है चाहे काई की जाय।" चुस्त पाजामे वाली एक बुढिया बोली।

"पर जान खाली हमारी क्यो जाये ?" बद्रुज्ज़मा न कहा। "थाने मे एक मज़ार शहीद हो गया। गोलीबार की मस्जिद पर भी दो हमले हो चुके हैं। 'अखबार आलम पढो, अम्मा, अखबारे-आलम।"

' मैं तो खाली कुरान पढ़ू हू बेटा।"

अपनी कैंची खडकाता कण्डक्टर आ गया।

' जवाहर नगर !" ज़रींकलम ने कहा।

यह जवाहर नगर नेहरू के सपनो की बस्ती नही था। यह समाज की

कै की तरह हर तरफ फैली हुई थी। इसमे मुसलमान ज्यादा थे। हिन्दू कम। मराठे बहुत कम।

भारत म कोई और परिवतन हो रहा हो या न हो रहा हो, परन्तु पहचानो मे दिन रात परिवतन हो रहा है। पुरानी पहचाना मे नयी पहचानो की कोपलें फूट रही हैं।

पहले लोग हिन्दू मुसलमान, सिख और ईसाई हुआ करते थे।

हिन्दू ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र हुआ करते थे। वैष्णव और शैव, सनातनी, ब्रह्म समाजी या आयसमाजी हुआ करते थे।

मुसलमान सुन्नी, शीआ और शेख, सैयद, मुग़ल, पठान हुआ करते थे।

सिख सिफ सिख हुआ करते थे।

ईसाई कथोलिक और प्राटस्टेंट आदि-आदि।

परन्तु अब हिन्दुओं और सिखो म नयी शाखें निकल आयी है। काग्रेसी हिन्दू, काग्रेसी हरिजन हिन्दू। काग्रेसी ब्राह्मण हिन्दू। बी जे पी हिन्दू। लाकदल हिन्दू। जनता पार्टी हिन्दू। आर एस एस हिन्दू। मराठा हिन्दू आदि-आदि।

मुसलमानो के पास कोई क्षेत्रीय पहचान नही। हमारी राष्ट्रीय राजनीति भी मुसलमान को केवल एक धार्मिक पहचान देती है। वह अब मराठी पजाबी, कर्णाटकी, आन्ध्र, गुजराती नही माना जाता वह केवल मुसलमान है राजनीति चाहे दायें हाथ की हा चाहे बायें हाथ की काई मुसलमान को उसका क्षेत्रीय पहचान देने को तैयार नही है। चुनाव के दिना मे चुनाव का नक्शा बनता है वोटरों की खानाबन्दी होती है तो मुसलमान का खाना अलग बनता है। उत्तरी बम्बई म इतन गुजराती, इतने मराठी, इतने सिन्धी, इतने पजाबी, इतन तमिल और इतने मुसलमान।

मुसलमान एक कटी हुई पतग की तरह सारे भारत म डग मार रहा है

और कटी हुई पतंग तो लूटी ही जाती है। जिसके हाथ जितनी डोर लग जाये। जिसके हाथ रंगीन कागज़ का कोई टुकड़ा आ जाय

जबलपुर
अहमदाबाद
मुरादाबाद
सम्भल
मालेगाँव
जमशेदपुर
अलीगढ़
मुरादाबाद
बड़ौदा
हैदराबाद
अहमदाबाद
आसाम
अलीगढ़
भिवण्डी
थाणे
कल्याण
बम्बई

यह सब किसी-न किसी तारीख के समाचार पत्रों का पहला पन्ना है।

नाम-नाम नाम। आग और लाशें। वही कहानी बार बार कही जा रही है कि घरों मुहल्लों, दुकानों बाजारों के भी मज़हब होने लगे हैं। यह शापिंग पट्टी हिन्दू है वह मुसलमान। यह दुकान हिन्दू है वह मुसलमान। यह खंजर हिन्दू है वह मुसलमान। यह लाश हिन्दू है वह मुसलमान।

मुसलमान की परिभाषा क्या है? मुसलमान वह है जो इस देश का

नागरिक है। चुनावो म वाट देता है। दगो मे मारा जाता है और जो इस बडे दश के किसी क्षेत्र का नही है, वह केवल मुसलमान है। इसके सिवा उसकी कोई पहचान नही है

परिणाम ? बम्बई-आगरा रोड ब द हो गयी क्योकि चन्द दिना के लिए शायद भिवण्डी, थाणे, कल्याण और बम्बई के कुछ हिस्से हि दुस्तान मे निकनकर मराठवाडे मे चल गय। सब्जी, तरकारी, फल, दूध, अण्डे की गाडियाँ हि दुस्तान और मराठवाडे की सीमा पर रुक गयी दाम वढ गये। जो चीज आठ रुपये किलो थी, बारह रुपये किलो हो गयी और बहुत सारी जमीन जिसे झोपडपट्टियो ने घेर रखा था खाली हो गयी ताकि उन पर ऊँची ऊची मँहगे फ्लटोवाली बिल्डिगें खडी हो सकें।

पस का कोई धम नही होता। वह सिर्फ़ पैसा हाता है। मुनाफे का कोई धम नही होना। वह केवल मुनाफा होता है, मँहगे फ्लैटो का कोई धम नही होता। वह केवल मँहग फ्लट होते हैं। रुविसयों का मजहर हाना है। कारों का कोई मजहब नही होता

अमृतसर

लुधियाना

चण्डीगढ

जाल धर

पठानकोट

बैंक आफ इण्डिया

पजाब नेशनल बैंक

स्वण म दिर

कोकीन

लाइट मशीनगनें

तोशाखाना नानक निवास, मजी साहिब, लगर, अकाल तख्त

हरमंदिर साहब
लाला जगतनारायण
बाबा गुरबचनसिंह
हरबसंसिंह मनचन्दा
विश्वनाथ तिवारी
रामायणी प्रतापसिंह
रमेश चन्द्र

वाहे गुरु दा खालसा
वाहे गुरु दी फतह

नाम नाम नाम। आग और लाशें बही कहानी। वही दृश्य

या अल्लाह! तुकाराम के पडपोते जर्रीकलम ने लम्बा सांस लेकर चुपके से कहा। बस एक झटके से रुकी और वह उस गोली के घर उतर गये जिसका नाम जवाहर नगर है।

जवाहर नगर मे सन्नाटा था। रात का सन्नाटा नही, तनाव का सन्नाटा। डर का सन्नाटा। नफरत का सन्नाटा।

पजाब म हिन्दू लाशें। ईराक मे ईरानी लाशे। ईरान म ईराकी लाशे। ईरानी शहर। ईराकी शहर। लेबनान, इजराईल, लटिन अमेरिका, अफ्रीका सिन्ध बलूचिस्तान, बाग्ला देश। लाशें दुनिया भर की। अरब लाशें। यहूदी लाशें। चिलियन लाशें। ब्राजीलियन लाशें। सल्वेडरियन लाशें। शीआ लाशें। सुन्नी लाशें। वियतनामी लाशें गोलियाँ अमरीकी। मशीनगनें अमरीकी। बम अमरीकी। हवाई जहाज अमरीकी लाशो का व्यापार

अली सरदार जाफरी ने अमन कान्फरेंस के जलसे मे यही तो तकरीर की थी।

ज़रीँवलम को जाफरी साहब के बोलने का अन्दाज अच्छा लगता था। जाफरी साहब की आवाज मे वह क्फी साहब की आवाजवाली खनक तो नही थी फिर भी यह दोना आवाजें जो कम्युनिस्ट पार्टी और तरक्की पसन्द अदब (प्रगतिशील साहित्य) की जहन्नम म न हाती ता मुहरम की मजलिसो म क्या मरसिए पढ रही होती।

ज़रीँवलम को सन् '70 की वह मजलिस अब भी याद थी। ख्वाजा अहमद अब्बास के घर पर मजलिस थी। मोमितीन म राजेन्द्रसिंह बेदी, कृष्णचन्द्र इन्द्राज आनन्द, महेन्द्रनाथ, राजकपूर, सुनील दत्त, नर्गिस, निम्मी, अली रजा, साहिर लुधियानवी, कमलेश्वर धमवीर भारती, पुष्पा भारती, अली अब्बास मूसवी, सैयदा मूसवी और श्री अटल बिहारी बाजपेयी (जो धमवीर भारती के मेहमान थे और उन्ही के साथ चल आये थे।)

अली सरदार जाफरी ने अपना लिखा हुआ एक सलाम पढा और कफी ने मीर वहीद का मशहूर मरसिया क्यो जलज़ने म आज जमी करबला की है

एक धमाका हुआ

खयालो का सिलसिला टूटा और एक डर उबकाई की तरह पट से उमडकर हलक तक आ गया।

उनके चारा तरफ लोग भाग रहे थे तो वह भी भागने लगे। हालाँकि उन्हे अपनी बस्ती के लिए 108 नम्बर की बस पकडनी थी भागते हुए उन्हे पहली बार खयाल आया कि हिन्दू मुसलिम दगो के मौसम के लिए उनका वस्त्र ठीक नही है। लम्बी शेरवानी। बडी मुहरीवाला लखनवी पाजामा। दाहने हाथ की तीसरी उगली म बडे स फीरोज की एक अँगूठी। यह हुलिया तो इतने जोर-जोर से कलमा पढना है कि दो फर्लांग से पता चल जाय। उन्होने तहैया किया कि अगर आज अपने घर जिन्दा पहुँच गये

हरमदिर साहब
लाला जगतनारायण
बाबा गुरबचनसिंह
हरवससिंह मनचदा
विश्वनाथ तिवारी
रामायणी प्रतापसिंह
रमेश चद्र

वाहे गुरु दा खालसा
वाहे गुरु दी फतह

नाम नाम नाम। आग और लाशें वही कहानी। वही दृश्य

या अल्लाह! तुकाराम के पड़पोते अर्रौक्लम ने लम्बा साँस लेकर चुपके से कहा। बस एक झटके से रुकी और वह उस गीली के पर उतर गये जिसका नाम जवाहर नगर है।

जवाहर नगर म सन्नाटा था। रात का सन्नाटा नही, तनाव का सन्नाटा। डर का सन्नाटा। नफरत का सन्नाटा।

पजाब म हिदू लाशें। ईराक मे ईरानी लाशें। ईरान मे ईराकी लाशें। ईरानी शहर। ईराकी शहर। लेबनान इजराईल, लटिन अमेरिका, अफ्रीका, सिन्ध, बलूचिस्तान, बाग्ला देश। लाशें दुनिया भर की। अरब लाशें। यहूदी लाशें। चिलियन लाशें। ब्राजीलियन लाशें। सल्वेडरियन लाशें। शीआ लाशें। सुन्नी लाशें। वियतनामी लाशें गोलियाँ अमरीकी। मशीनगनें अमरीकी। बम अमरीकी। हवाई जहाज अमरीकी लाशो का व्यापार

अली सरदार जाफरी ने अमन कान्फरेंस के जलसे म यही तो तकरीर की थी।

जरींकलम को जाफरी साहब के बोलने का अन्दाज अच्छा लगता था। जाफरी साहब की आवाज म वह कैफी साहब की आवाजवाली खनक तो नही थी फिर भी यह दोनो आवाजें जो कम्युनिस्ट पार्टी और तरक्की पसन्द अदब (प्रगतिशील साहित्य) की जहन्नम म न होती तो मुहरम की मजलिसा म क्या मरसिए पढ रही होती।

जरींकलम को सन '70 की वह मजलिस अब भी याद थी। ख्वाजा अहमद अब्बास के घर पर मजलिस थी। मोमितीन म राजेन्द्रसिंह बेदी, कृष्णचन्द्र इन्द्राज आनन्द, महेन्द्रनाथ, राजकपूर, सुनील दत्त नर्गिस, निम्मी अली रजा साहिर लुधियानवी कमलेश्वर, धमवीर भारती, पुष्पा भारती अली अब्बास मूसवी, सैयदा मूसवी और श्री अटल बिहारी बाजपेयी (जो धमवीर भारती के मेहमान थे और उन्ही के साथ चल आये थे।)

अली सरदार जाफरी ने अपना लिखा हुआ एक सलाम पढा और कैफी ने मीर वहीद का मशहूर मरसिया क्यो जलजले म आज जमी करबला की है

एक धमाका हुआ

खयालो का सिलसिला टूटा और एक डर उबकाई की तरह पेट ‹ उमडकर हलक तक आ गया।

उनके चारो तरफ लोग भाग रहे थे तो वह भी भागने लगे। हालांकि उन्हे अपनी बस्ती के लिए 108 नम्बर की बस पकडनी थी भागते हुए उन्हे पहली बार खयाल आया कि हिन्दू मुसलिम दगो के मौसम के लिए उनका वस्त्र ठीक नही है। लम्बी शेरवानी। बडी मुहरीवाला लखनवी पाजामा। दाहने हाथ की तीसरी उगली म बडे से फीरोजे की एक अँगूठी। यह हुलिया तो इतने जोर-जोर से कलमा पढता है कि दो फलांग से पता चल जाय। उन्होने तहैया किया कि अगर आज अपने घर जिन्दा पहुँच गये

तो कल से अब्ब की जीन्स पहनकर बाहर निकला करेंगे। जान है तो जहान है और तब उन्हे खयाल आया कि बाबू गोपीनाथ बक औरंगाबादकर भी तो यही कपडे पहना करते थे।

मौत का एक दिन मुअय्यन है
नींद क्यो रात भर नही आती

एक गली से भागता हुआ एक लडका निकला उसकी आतें लटक रही थी। वह उन्हे दोनो हाथो से दबाये भाग रहा था। उसकी फेडेड जीन उसके खून से बदरग हो रही थी पता नही वह हिन्दू था या मुसलमान। जरींक्लम को तो वह अपने से भी ज्यादा डरा हुआ एक आदमी दिखायी दिया। वैसे वह अभी पूरा आदमी भी नही था। जीता तो एक-आध बरस मे आदमी हो जाता।

उसके पीछे 18 20 आदमियो का जो गोल दौड रहा था, वह भी पूरे आदमियो का गिरोह नही था। वह भी बच्चे ही थे। उन्होने भी जीन्स या पतलूनें पहन रखी थी। उनके मुह को खून लग चुका था वह अपने शिकार के पीछे दौड रहे थे और इसीलिए वह जरींक्लम को खुले हुए गटर मे फलांगता न देख पाये।

उस गटर की बदबूदार कीचड उन्हे मा की गोद की तरह सुरक्षा की जगह लगी। वह उस गटर म दुबककर बैठ गये

मगर उनका कूदना उस समुन्दरी चूहे को अच्छा न लगा जो कुछ खाने मे मसरूफ था। उसने खीसें निकालकर उनकी तरफ देखा और अपनी पिछली टाँगो पर खडा हो गया आत्मरक्षा के लिए। और जरींक्लम न देखा कि वह किसी आदमी की लाश खा रहा था। और उस लाश से सैकडो छोटी छोटी मछलियाँ भी लिपटी हुई थी।

जरींकलम की घिग्घी बँध गयी—कही दूर से किसी आदमी के कराहने की आवाज आयी जरींक्लम को यह जानने मे कुछ क्षण लगे कि वास्तव

मे वही लाश म राह रही थी।

इस बीच चूहा जा लगभग बिल्ली जितना बडा रहा होगा उन्हे नजर-अन्दाज करके फिर अपने काम म लग गया

जर्रीनलम का उबकाई आयी और वह कै करने लगे

नाले के बाहर मे आवाजें आ रही थी कि जिसे मारा वह माला मुसलमाना जैसी दाढी बाह को रखायेगा था ! पैण्ट सरका के देखने म तो सारा टेम ही खलास हो जायगा। पुलिस के आने मे खाली आधाहिच क्लाक तो बाकी होता

यह सुनकर जर्रीकलम की जान म जान आयी कि आधे घण्ट मे पुलिस आ जायगी। पुलिस अर्थात सुरक्षा फिर भी वह उस गन्दे नाले की बदबू ओढे बहुत देर तक बठे रहे आर मछलियाँ उस आदमी को खाती रही और फिर वह आदमी कराहत कराहते मर गया।

किसी चीज न उनके पाँव म काटा। वह चीख उठे—और उनकी डरी हुई आँखो न एक समुन्दरी चूहे की आँखें देखी और वह डरकर भाग नाले की बदबू उनके पीछे दौडी

हिन्दुस्तान म तो मैराथन दौड का हर स्वर्ण पदक आना चाहिए दौड शुरू होने से पहले दौडनेवाले के कान मे बस कोई यह फूक दे कि बलवाई आ रहे हैं।

जर्रीकलम भागते भागते अपनी बस्ती मे पहुँच गय।

यह बस्ती खाते पीते गरीबो की बस्ती थी। बम्बइ म गरीब तीन तरह के होते हैं—खाते पीते गरीब, गरीब और बहुत गरीब।

खाते-पीते गरीब वह हैं जो वास्तव म गरीब नही हैं। जब बम्बइ आय थ तब अवश्य गरीब थे। कोठरी भी न ले सके तो वही सरकारी जमीन पर इलाके के दादा की इजाजत म झोपडी डाल के रहने लगे।

यह झोपडी प्रेमचन्द की कहानियो जसी झोपडी नही होती। इसे

झोपडी इसलिए कहते हैं कि इसका नामकरण नहीं किया जा सका है। यह तीन-चार फीट ऊँची एक चीज होती है जिसकी दीवारें सड़े गले पैकिंग के बक्सा की होती हैं। ऊपर फटी हुई तिरपाल या प्लास्टिक का टुकडा। न दरवाजा न खिडकी। लोग उनमे रेंगकर अन्दर जाते हैं और रेंगकर बाहर आते हैं यह ईमानदार कामगारो की झोपडिया हैं फिर इन्ही झोपडिया म हरी लाल झण्डियाँ लटकाकर दुल्हन ले आयी जाती है। फिर इन्ही झोपडियो म बच्चे होते हैं फिर उन बच्चो म स कोई जेबकतरा हो जाता है कोई कच्ची दारू के धन्धे म लग जाता है कोई किसी दादा के साथ लगकर किसी तसक्री या एम पी, एम एल ए की छत्रछाया म चला जाता है। घर म थोड़ा पसा आने लगता है। झोपडी का जरा कद निकल आता है। दरवाजा लग जाता है। खिडकिया बन जाती हैं। टीन की छत पड जाती है। फिर इधर उधर की जमीन जुड जाती है। कभी-कभी एक मजिल और चढ जाती है और छत टाइल की हो जाती है

जब म तरफ देखो का रास्ता खुला है तब स झोपडपट्टियो म खाते-पीते ग़रीबो की सख्या कुछ और बढ गयी है। शाप के कैसेट प्लयर 'सोनी' के टेलीविज़न सट और इक्का दुक्का नशनल क वी सी आर। विदेशी खुशबुएँ आदि-आदि।

इन्द्रानगर पुलिसवालो मे, जरीकलम के लिए नहीं, अपने ठर्रे की भट्टियो, चरस गाजे और अफीम के धन्धे और अपने दादाओ के लिए इज्जत की निगाह स देखा जाता था।

जवाहर नगर और इन्द्रानगर के बीच मे एक गन्दा नाला था। जिसकी बदबू उन दोनो बस्तियों म बराबर-बराबर बाटी हुई थी।

कारपोरेशन ने भ जमा कर्या नाले पर एक पुल बनाकर इन दोनो बस्तियो को जोड दिया था।

इन्द्रानगर म हिन्दू ज्यादा थे मुसलमान कम।

जवाहर नगर मे मुसलमान ज्यादा थे हिन्दू कम।

दोना बस्तिया म गरीब ज्यादा थ और खाते पीते गरीब कम। इन्द्रा नगर मे तो खाते-पीते गरीब बहुत ही कम थे। परन्तु जवाहर नगर म दुबई मस्कत, अबूधाबी, दम्माम की हवाएँ चल रही थी। रुपय की जगह दिल चल रहा था। अब्दुल करीम, हलीम जाफर मुरतुजा अली, मुहम्मद अब्बास के घरवाले जवाहर नगर म रहते थे और यह लोग खुद गल्फ देशा म काम करते थ। इनके नामो म टी वी कसट प्लेयस, जार्जेट, शिफॉन, आदि-आदि की महक आती थी। और उस महक का हवा पूरे जवाहर नगर और इन्द्रानगर मे फैलाय हुए थी

शाम को आसपास की औरत इन खाती पीती झोपडियो मे जमा हो जाती। कोई हिन्दी फिल्म देखती। कोई सिगारमेज पर सजा हुई लिपिस्टिके और सण्ट की शीशियाँ और पाउडर के डिब्बे और भव बनानवाली पेंसिलें और नाखूनो को सजाने के सामान और आई शैडो का इन्द्रधनुष दखती। और गले म पडी सोन की जजीरें और उँगलिया मे ठुसी हीरे की अँगूठिया दखती और उन्ह अमिताभ और जितेन्द्र और सनी और अनिल कपूर सब फडवे दिखायी देने लगते

करीमुलम की बडी बेटी हलीमा सयद मुरतुजा नकवी स ब्याही हुई थी, जो अबूधाबी म मिकैनिक था।

भिवण्डी, थाणे कल्याण की खबरों न हलीमा को सहमा दिया था। जवाहर नगर म तो हिन्दू ही दाल म नमक बराबर थे, और मराठे हिन्दू तो थे ही नही। पर नट्टा करीम था जिसने जवाहर नगर म शिवसेना की पहली मुसलमान शाखा खोल रक्खी थी और पुलिस चौकी म उसकी बडी मान जान थी। और थानेदार कमाकर का तो उसक घर म आना जाना था। नट्टे करीम की बहन की शादी म थानेदार कर्माकर ने सोन का एक सेट दिया था।

इसलिए अमीरजादा को पता चला कि औरंगजेब, कालेकर से मिल गया है तो उसे यकीन आ गया कि वह उसे क़त्ल करवाना भी चाहता ही होगा। इसलिए अमीरजादा के लिए आवश्यक हो गया कि वह औरंगजेब को क़त्ल करवा दे और औरंगजेब का क़त्ल हो भी गया होता अगर नट्टे ने उसके कान में यह फूंक न दिया होता कि उस कब और कहां क़त्ल करने की तयारी की जा रही है।

चुनांचे अमीरजादा और औरंगजेब में चल गयी और नट्टे करीम को सांस लेने का मौका मिल गया

उसे थोडी मदद इन्द्रानगर से भी मिल रही थी कि वह शिवसेना का गढ था। अकसर गयी रात को नट्टा करीम और लम्बा कालेकर बीच की पुलिया पर मिलते। कभी दारू एक लाता, कभी दूसरा। और यह दोनों अमीरजादा को उखाडने के सपने बुना करते। पर कर्माकर ने साफ कह दिया था कि अमीरजादा से लडाई चली तो पुलिस नट्टे का साथ खुल के न दे पायेगी क्योंकि अमीरजादा रूलिंग पार्टी की मुन्नामी शाखा का अध्यक्ष था। वैसे कर्माकर खुद भी अमीरजादा से जला हुआ था क्योंकि इस चौकी पर रहने के लिए वह अमीरजादा को हफ्ता दे रहा था।

उपस्वास्थ्य मन्त्री श्रीमती फूलमती गायकवाड को अमीरजादा बिलकुल पसन्द नहीं था और जवाहर नगर उनकी कांस्टिचुएन्सी में था। उनकी नाराजगी का कारण यह था कि कर्माकर उनका 'सगेपाला' था और लम्बे कालेकर और नट्टा करीम से उन्हें चुनाव में बहुत ज्यादा मदद मिली थी जबकि अमीरजादा ने अन्दर ही-अन्दर जनता पार्टी के कुरबान अली की मदद की थी और श्रीमती गायकवाड हारते हारते बची थीं।

तो श्रीमती गायकवाड, नट्टा करीम और लम्बा कालेकर का एक त्रिशूल तैयार हो गया।

अमीरजादा इस त्रिशूल से आगाह था और इसीलिए वह औरंगजेब

आलमगीर से ऐम म विगाडना नही चाहता था परन्तु कोई चारा नही था। और धीरे-धीरे औरगजेव का असर कुरैशिया म भी वढन लगा था क्योकि धम का नशा तो कोकीन चरस के नशे स भी कही ज्यादा तेज होता है।

कुरैशी खोपडियो म धीरे धीरे दाढियाँ उगन लगी। खुद अमीरजादा के बडे बेटे रईसजादा ने दाढी रख ली थी।

शराव चरस गाजे के धन्धे के साथ-साथ औरगजेव पाँचो वक्त की नमाज भी पढता था और अमीरजादा का असर ताडने के लिए उसन सामने वाले मदान म नमाज पढना शुरू किया और धीरे धीरे जवाहर नगर की तमाम दाढियाँ उसके पीछे सफ वाधकर नमाज पढन लगी और वह मदान 'मस्जिद' कहा जाने लगा।

मस्जिद' वनन से पहले वह जमीन पब्लिक लैट्रीन की तरह थी। शाम के झुटपुटे और रात के सन्नाटे म औरतो की महफिल जमा करती थी। मस्जिद के कारण औरतो को अब इन्द्रानगर और जवाहर नगर के वीच का पुल पार करके इन्द्रानगर की तरफ जाना पडने लगा था।

फिर एक साल लम्बे कालेकर न 'गणपति वप्पा मोरया' का नारा लगाकर गणेशजी के मौसम मे वहाँ साढ़े तीन फिट के एक गणेशजी विठला दिय।

नमाज के वक्त जव रोज की तरह औरगजेब वहाँ आया क्यू कि अजान वही दिया करना था (क्योकि अजान सिफ उसी को याद थी) तो उसने गणेशजी को देखा

तू-तू, मैं मैं शुरू हो गयी। इधर से कुरैशी आ गय उधर से लम्बा कालेकर। तू-तू मैं मैं की आवाजें जरींक्लम की खोपडी तक भी गगी। वह मस्जिद' से मिली हुई थी। हलीमा बिचारी घवराके 'नादेअली' पढने लगी।

अल्ला समझे इन मुये जमातियो से" जरींकलम की वीवी ने कहा।

और इससे पहले कि जरींकलम कुछ कहे कि हैदर भागा भागा आया। सांस फूला हुआ।

"अरे इन्दर औरगजेब और लम्भा कानकर म बोमा बोम होयला है।"

हलीमा ने उसे दो हत्थड मारे।

"तू वहा क्या करने गया था मट्टी मिले।'

"देखो बेटी मैं तुझसे बार बार कहता हूँ कि मुतुजा मियां का लिखा। कही भले मानसो के इलाके म कोई कायदे का फ्लैट ले लें। वरना मियाँ हैदर की जबान बिलकुल बढ़ जायगी। जरा शेरवानी देना, मैं देखता हू।"

'तुम चुपचाप बठे रहो जी! मुनो माटी मिलो के झगडे से तुम्हे क्या लेना।"

जरींकलम बठ गय। परन्तु बाहर का शोर बढता ही जा रहा था कि पुलिस के सायरन की आवाज आयी और अब जरींकलम के लिए घर मे बैठना असम्भव हो गया। बीबी बडबडाती रह गयी पर वह शेरवानी के बटन बन्द करते बाहर चले गय।

ई बेडे मियाँ, खुदा न ख्वास्ता मौब्बत लिखी है एही आने जावे म। अरे हम कहित है न कि बाहर झगडा होत है तो घर पटा के बैयठे को चहिए ना। तुम मुरतुजा को आगे लिख दओ कि खत को तार समझे और तुरन्त मौलाना रिज़वी के पडोसवाला फ्लट खरीद लें। शीअन का माहौल त मिलिहे मैंहूँ इन मूए स्साइयन मे रहत रहत आजिज़ आ गयी हौं।"

हलीमा उदास हो गयी। क्योकि जो वह जानती थी वह अम्माँ नही जानती थी। मुतुजा हलीमा का चचाजाद भाई भी था। हलीमा से उसने प्रेम विवाह किया था और इसीलिए उसके बाप ने उस घर से निकाल दिया था। उसका बाप अहमद अली जौनपुर रेलवे म टिकट चेकर था और वादशा की रेलवे कालोनी के एक पक्के क्वाटर मे रहता था।

उसने अली भाई ताजुद्दीन की बेटी से मुर्तुजा की शादी तय की थी। अली भाई दहेज म एक बेडरूम हाल का फ्लैट भी दे रहे थे।

इसलिए जब मुतुजा न हलीमा से निकाह कर लिया तो बाप ने बेटे को घर स निकाल दिया और भाई स बोलचाल ब द कर दी।

जरींकलम को इसका बडा दु ख हुआ। पर वह कर भी क्या सकते थे।

और तब मुतुजा कुछ करता भी नहीं था। मगर मोटर मिकैनिकी का काम सीख रहा था ता अपने उस्ताद गुलाम मुस्तफा के साथ अबूधाबी चला गया और अब माशा अल्लाह स वहाँ उसका अपना गरेज है। फर फर अरबी बालता है। पहली की पहली मनीआडर आ जाता है।

धीरे धीर यह खबर मुर्तुजा के बाप का मिली कि जरींकलम के घर मे सत्ताइस इच वाला सोनी का कलर टी वी है। नेशनल का वी सी आर है। और वह भी ऐसा कि जहाँ बैठे हो वही से चला लो और ब द कर लो। अब ता उनके कान खडे हुए। फिर पता चला कि चक्कर क्या है। तब तो बेटे की याद उ ह तडपान लगी। और उ होंने बडप्पन का सबूत देते हुए बेटे को माफ कर दिया। पर वह अपन भाई की तरफ से दिल साफ करन पर तैयार नही थ।

अब जाहिर है कि मुतुजा एक शरीफ लडका था। माँ-बाप से जि दगी भर रूठ तो रह नही सकता था।

तो वह अपने आन की तारीख से चार दिन पहले आता और सीधा बाप के घर जाता और चार दि के बाद इधर आता। यह बात केवल हलीमा को मालूम थी। और वह अ दर ही-अ दर कुढा करती थी। और इस बार ता मुतुजा न उससे साफ-साफ कह दिया था कि अगली बार आयगा तो हलीमा का ससुराल ले जायेगा और वह वही रहा करेगी क्योकि बच्च यहाँ खराब हो रहे हैं। उसन वरसोवा म दो बेडरूम-हालवाला एक फ्लट भी बुक करवा लिया है पर उसका हुक्म था कि चचाजान और

चचीजान को यह बात न मालूम हो

"हम कहित है न हैदर, कि भया के परेशान मत करो नही तो "

हलीमा न देखा कि अम्माँ हैदर के पीछे एक पाँव की जूती लिये दौड रही है और हैदर दूध पीते भाई को चिपकाये कभी कूदकर इधर और कभी कूदकर उधर

बाहर का शोर थम चुका था।

जर्रीकलम शेरवानी के बटन खोलते अन्दर आये।

' कर्माकर चौबीस मुसलमानो को गिरफ्तार कर ले गया।"

"रईसजदवा को पकड ले गया कि ना ?" हलीमा की अम्मा ने पूछा— "केह मारे कि ओकी दाढी चारयारी झण्डा बनके बहुत फडफडाइत' है आजकल।"

और जब उन्हे पता चला कि रईसजादा भी गिरफ्तार हो गया है तो उन्होंने अल्लाह का शुक्र अदा किया

पर उन बिचारी को क्या पता था कि आज जवाहर नगर मे कसा बीज बोया गया है।

अमीरजादा जाकर औरगजेब के सिवा सबकी जमानत करवा लाया और उसने कर्माकर से कह दिया कि अब तो वहाँ मस्जिद ही बनेगी।

दस दिन मे इटें आ गयी।

इन्द्रानगर ने फौजदारी का मुकदमा दायर कर दिया। अमीरजादा कहता था कि यह जगह तीस बरस से जवाहर नगर की ईदगाह है। कालेकर कहता था कि गणेश चबूतरा है।

दोनो बस्तियो का तनाव बढने लगा तो अमीरजादा ने एक दिन औरगजेब को पकडवा के भरे बाजार म उसकी दाढी मुडवा दी और तीसरे दिन जब रईसजादा पेट्रौल पम्प से अपनी मोटर साइकिल मे पेट्रौल भरवा रहा था, एक आदमी मोटर साइकिल पर आया और रईसजादा को चार

गोलिया मारकर हवा हो गया

और फिर कत्लो का एक सिलसिला शुरू हो गया। कुल मिला के बारह आदमी मारे गये। चार आदमी नट्टा करीम के। जिनम एक उसका दामाद भी था। चार आदमी लम्बे कालिकर के और रईसजादा को मिलाकर चार आदमी अमीरजादा के

कहने का मतलब यह कि जवाहर नगर भारतीय राजनीति का चबूतरा था।

कांग्रेस (आई)
जमाअत इस्लामी
शिवसेना
साधारण लोग
और इस चबूतरे पर गुण्डागर्दी का तम्बू तना हुआ था।
शराब, गाजा चरस, कोकीन।
ईदगाह। गणेश चबूतरा।
कांग्रस (आई)। शिवसेना।
कलर टेलीविजन।
वी सी आर।
हमारे अगना मे तुम्हारा क्या काम है।
स्मगलिंग × दादागीरी = राजनीति
जबान × भाषा = राजनीति
धम × मजहब = राजनीति
चूकि स्मगलिंग × दादागीरी = राजनीति
चूकि धम × मजहब = राजनीति
इसलिए स्मगलिंग × दादागीरी = धम × मजहब।
और अगर इन सबको जोड दें तो हासिल जमा लाश!

इसलिए एक सडी गली लाश बनना तो जवाहर नगर की तकदीर था क्योंकि 'हासिल जमा ही का धार्मिक नाम तकदीर है।

उप स्वास्थ्यमन्त्री, कर्माकर, नट्टा करीम और कालेकर ने अमीरज़ादा का असर तोडन का फसला तो उसी दिन कर लिया था जिस दिन शिवसेना के नेता न मुसलमाना के खिलाफ भाषण दिया था और जिस भाषण के जवाब मे काग्रेस (आई) के एक एम एल ए श्री खान न श्री बाल ठाकरे की एक तस्वीर को जूते का हार पहनाया था।

और जब भिवण्डी मे आग लगी तो उसके शोलो की रोशनी म इन लोगो ने जवाहर नगर की तकदीर साफ साफ पढ ली।

नट्टा करीम तो अपन आदमिया को लेकर पिछली रात ही भिण्डी बाज़ार उठ गया था। लम्बे कालेकर ने भी अपना परिवार सरका दिया था और खुद कमाकर की हवालात म बन्द हो गया था।

कमाकर ने कालेकर के आदमियों को घासलेट, सोडे की बोतले और देसी बम सप्लाई किय जिसका खच उप स्वास्थ्यमन्त्री के चुनाव फण्ड से दिया गया।

मगर हलीमा को इन बातो की खबर नही थी। वह पास पडोस की औरता को जमा किये अपने वी सी आर पर 'अन्धा कानून' देख रही थी।

हलीमा की मा पडोस की एक लडकी को दबाचे बठी खत लिखवा रही थी और उस लडकी का ध्यान 'अन्धा कानून' मे था

हलीमा की अम्मा बोल रही थी— 'वडके अब्बा को बाद तसलीम के मालूम हाय कि इहाँ अल्लाह के फजल स खैरियत है कि हलीमा के अब्बा को क दिन से खाँसी आइत है। मोरियो तबीयत ज़रा सुस्ते चलित है। हलीमा का हाथ पक गया है। उम्मीद है कि उहाँ भी सब खरियत होगी "

खत यही तक पहुँचा था कि

"कत्ल, लूटमार, बबरता ऐसे मजर कि आँखें मानने से इनकार कर दें धम के नाम पर होनवाले इस मजर की याद का भूत बरसा हमे डराता रहेगा जि दा जलते हुए आदमी घिनावनी बबरता भीषण घृणा

और मुख्यम त्री ने अब तक यह भी जरूरी न जाना कि जो कुछ हो रहा है उसकी इखलाकी जिम्मेदारी ही स्वीकार कर लें ?

इन घावो पर रिलीफ फण्ड का फाया लगाया जायेगा ताकि मजलूमो की खामोशी खरीदी जा सके राजनीति का बाजार एक बार फिर गम होगा हाँ शायद इतना फक जरूर पडे कि वोट पहले से जरा ज्यादा मँहगा हो जाये।'

एक तरफ से कालेकर के बेवर्दी लोग आय। एक तरफ से कर्माकर उप-स्वास्थ्यम त्री के सगेवाले, वर्दीवाले लोग आये।

10 आदमी तलवारो और छुरे से मारे गये। सत्ताईस आदमी पुलिस की गोली से और 20 मद, औरतें और बच्चे जलकर मरे कि वह झोपडिया मे थे। उनमे आग लगा दी गयी थी। पुलिस ने बताया कि उसे गोली इसलिए चलानी पडी कि जान बचाकर भागते हुए जवाहर नगर को देख कर पुलिस को ऐसा लगा कि लोग उस पर हमला करने दौडे चले आ रहे हैं।

157 आदमी बलवा करने के जुम म गिरफ्तार भी किये गय। 11 इन्द्रानगर और 146 जवाहर नगर के और इन 146 लोगों म से 99 प्रतिशत लोग अपने घरो से घसीटकर निकाले गय थे।

पुलिस की गोली से कालेकर का कोई आदमी न घायल हुआ न मरा। कालेकर का कोई आदमी गिरफ्तार भी नही हुआ। जो 11 आदमी पकडे

प्रतीश न दी इलस्ट्रेटेड वीकली (27 5 84) (स्वत त्र अनुवाद)

गय वह सोशल वकर थे और शान्ति चाहते थे।

धर्माधिकारी जब आर्मी की एक टुकडी लेकर वहाँ पहुँचा तो 57 लाशे जमा की गयी।

इन लाशो मे अमीरजादा की लाश थी। हलीमा की लाश थी। हैदर की लाश थी। हलीमा की मा की लाश थी। पडोस की उस बच्ची की लाश भी थी जो हैदर की नानी का खत लिख रही थी। उस लडकी का नाम मीना कुमारी था।

और लाशे भी थी। परन्तु धर्माधिकारी सिफ एक लाश को पहचान सका। वह लाश तुकाराम मिराजकर के पडपोते जरींकलम मीर अली अहमद जौनपुरी की थी, आमची मुम्बई !

और जिस वक्त जवाहर नगर मे लाशें शिनाख्त की जा रही थी उस वक्त लम्बा कालेकर नट्टे करीम के साथ उसके वहनोई के मुहम्मद अली रोडवाले घर मे हलीमा के घर से उठवाय हुए वी सी आर पर यश चोपडा की फिल्म 'दीवार' देख रहा था। आमची मुम्बई !

अपनी आँखो को सँभाले रखना

मूसवी सोफे पर उकड़ूँ बैठा दस बारह दिनो की बढी हुई दाढी खुजला रहा था और बम्बई के ताजा साम्प्रदायिक दगो के बारे म नताओ क बयानो का फाइल पढ रहा था ।

बसन्त दादा पाटिल मुख्यमन्त्री ने टाइम्स ऑफ इण्डिया के सवाद-दाता के इस बयान को गलत बताया था कि भिवण्डी मे लोग जिन्दा जलाये गये । टाइम्स आफ इण्डिया के सवाददाता ने कहा कि बसन्त दादा पाटिल झूठ बोल रहे हैं ।

भारतीय जनता पार्टी के मच से कोई बयान नही आया ।

जनता पार्टी चुप रही ।

शिवसेना चुप रही ।

पीजेण्ट एण्ड वकस पार्टी चुप रही ।

काँग्रेस (एस) चुप ।

काग्रेस (जे) चुप ।

काँग्रेस (आई) चुप ।

सी पी (एम) चुप ।

सी पी (आई) चुप ।

भारतीय राजनीति चुप के सहरा म खडी थी। भारतीय पत्रकार बोल रह थे।

परन्तु 'टाइम्स आफ इण्डिया' जा सदा दुघटना पीडितो के लिए रिलीफ फण्ड खालता है उसने जसे भिवण्डी, थाणे, कल्याण और मुम्बई के दगा पीडितो की सहायता की आवश्यकता ही न महसूस की।

सरकार की तरफ से जो थोडा बहुत राहत काय किया गया वह मुसलमान नेताओ ने आपस मे बाँट लिया

"भई अल्ला के लिए शेव करो।" सैयदा की आवाज आयी। मूसवी ने आँखें उठायी सयदा स्टेनलेस स्टील की थाली म भिण्डिया लिये उसके पास आ बठी और भिण्डियाँ काटन लगी।

"मै तो दाढी रखने की सोच रहा हूँ" मूसवी न कहा।

'वह क्यो भई !" सयदा ने उसकी तरफ देखे बिना पूछा।

'नही, मैं मजाक नही कर रहा हूँ।' मूसवी न कहा।

इस बार सयदा ने छुरी थाली मे रख दी और उसकी तरफ देखते हुए बोली क्या कहा तुमने।"

"वही जो तुमने सुना।" मूसवी ने फाइल बन्द कर दी। "और वाहिद का खून पतला है तो होने दो, उसकी मुसलमानी करवा दो।"

'तुम पागल हो गये क्या !"

'नही भई।" उसने कहा। "मै जिन्दगी भर मजहब और उसके कट्टरपन से लडता रहा हूँ। मगर हिन्दुस्तान का दस्तूर मुझे मुसलमान होकर इज्जत स जीन का जा हक देता है, मैं इस हक को शिवसेना, विश्व हिन्दू परिषद, हिन्दू एकता समिति या भारतीय जनता पार्टी के डर से खोना नही चाहता। जरा कागज कलम लाव। दावतनामे का मजमून बनाऊँ, धूमधाम से सैयद मुहम्मद वाहिद मूसवी की मुसलमानी करवाऊँगा।"

"बडे आये हैं उसकी मुसलमानी करवानेवाले।" सैयदा हत्थे से उखड

गयी, आज तक एक वखत की नमाज पढते तो देखा नहीं। रोज़ा कभी रक्खा नही। चले हैं बच्चे की मुसलमानी करवाने।"

"नमाज रोज़े को मुसलमानी से क्या लेना देना है भई। नमाज रोज़ा न करूँ तो क्या बच्चे की मुसलमानी भी न करवाऊँ। बिलकुल ही काफिर हो जाऊँ। "

वह फिर फाइल पढने लगा और गुनगुनाने लगा—

मैं अकेला, अकेला खुदा, बम्बई शहर म
आदमी आदमी से जुदा, बम्बई शहर मे
शाखे गुल खुश नही, फूल दिलगीर हैं
हर गली, हर गली से खफा बम्बई शहर मे
अपनी परछाइँयाँ साथ चलती नहीं
सारी परछाइयाँ बेवफा बम्बई शहर मे

और सयदा उसकी हलकी मीठी गुनगुनाहट के जादूघर मे फँसकर यह भी भूल गयी कि वह अभी-अभी वहीद की मुसलमानी करवाने की बात कर रहा था

वह भिण्डी काटना भूल गयी और उन दिनो को याद करने लगी जब वह तीन शरीर, प्यारे प्यारे झगडते, शोर करते बच्चो की माँ नही थी। जब वह 20 बरस की एक लडकी थी। गोरी रगतवाली। काली आखोवाली। काले बालोवाली। खिलखिला के हँसनेवाली। फज अहमद फज की रसिया। स्टूडेण्ट फेडरेशन की मेम्बर। कम्युनिस्ट पार्टी की हमदद और अब्बास मूसवी की आशिक। बाल सँभालती तो हँसी की गिरह खुल जाती और वह सारे आँगन या सारे कमरे या क्लास रूम या कालेज के कारिडॉरो म बिखर जाती।

अब्बास को दरअस्ल इसी हँसी ने गिरफ्तार किया था। वह एक मुशायरे म अपनी एक नज्म सुना रहा था

अजनबी शहर नही है कोई
कौन-सा शहर है वह
जिसमे कभी
चाद निकला न हो दिलदारी का
कौन सा शहर है वह जिसके गली कूचो की दीवारो पर
कोई अफसाना लिखा ही न गया हो अब तक
जिसके बाजारो से सह

वह यही तक पहुँचा था कि हँसी का एक फव्वारा छूटा और वह शराबोर हो गया।

उसने सामने देखा।

चौथी कतार मे लडकियो का एक झुण्ड था और उसम एक लडकी अपनी हँसी रोकने की कोशिश म दुहरी हुई जा रही थी।

वह बताव हँसी फिर कभी उसके दिमाग से निकली ही नही। उसे परेशान करती रही जैसे किसी शे'र का पहला मिसरा शायर को तब तक परेशान करता रहता है, जब तक कि दूसरा मिसरा न हो जाय।

उस हँसी का दूसरा मिसरा सुहागरात हाथ आया।

उस रात वह बहुत नवस था। सैयदा वीर वहूटी बनी सेज पर बैठी थी तो उसने कहा

तुम कहो तो आज उस नज्म का वाकी हिस्सा भी सुना दू जो उस मुशायरे म तुम्हारी हसी की वजह से रह गया था।'

और उसी हँसी का फव्वारा फिर छूटा और वह फिर शराबोर हो गया और उस रात से आज तक वह हँसी उसे शराबोर ही करती चली आ रही थी।

ऐसा नही कि 21 बरस मे कभी कहा-सुनी ही न हुई हो। हुई। मगर कहा-सुनी हमेशा कही बीच म दम तोड देती। एक बार तो मूसवी ने यहाँ

तक कह दिया— कमाल है यार ! तीन वच्चा की माँ हा गयी और अभी तक ठीक से लडना तक नही आया ' यादो की गलिया म घूमते घूमते वह जब उस जगह पहुँची ता उसे फिर हँसी आ गयी

क्या हुआ भई ? '

"तीन बच्चो की माँ हा गयी और अभी तक ठीक से लडना तक नही आया। सयदा न नकल की और दोना हँसने लगे।

' वहीद का खतना मत करवाव।'

"अरे यार तुम्हारी मर्जी के खिलाफ कभी कुछ हुआ है इस घर म।" मूसवी ने कहा—' मैं तो यू ही जरा अपनी झल्लाहट उतार रहा था, झल्लाहट भी एक डायनमिक वल्यू ऑफ लाइफ है।"

माई डियर की किताबत किये हुए फर्मे लेकर अली अकबर कातिब आ गये।

सयद अली अकबर जाफरी बिलगिरामी न झुककर सलाम किया।

आइए मीर साहब।" मूसवी ने अपने पासवाली कुर्सी को थपथपाया। ' यहा तशरीफ रखिए।'

अली अकबर न तशरीफ रख दी।

नागपाडे म तो सब ठीक ठाक है ना।"

वहाँ क्या होगा साहब।' अली अकबर न कहा। हाजी सुलतान और इसमाइल ममन न जेल म बठे बैठे असलहे तकसीम करवा दिये और मराठो और पुलिस दोनो को यह मालूम करवा दिया गया कि अब मुसलमान मरने मारने पर तैयार हैं और मरनेवाले से तो एक बार मलकुलमौत भी डर जायें।" अब अली अकबर ने आवाज दबायी और राजदाराना लहजे मे कहने लगे। यह भी खबर मिली है कि हफ्ते अशरे म जनरल साहब की फौजें खास बम्बई म धरी होगी।

अच्छा!"

'ऐ बस रहने भी दीजिए अक्बर साहब !" सैयदा न कहा। "जनरल साहब की फाजें बम्बई मे घरी हागी। तब तो वह शिवाजी पार्क मे तकरीर भी करेंगे। आप लागो की यही बात मुझे अच्छी नही लगती। हिंदुस्तान पाकिस्तान म हाकी का मैच हो तो आप पाकिस्तान के लिए ताली बजायेंगे और फिर शिकायत करेंगे कि हिन्दू यहा हमे जीने नही देता।"

"नही दुल्हन साहिबा, मैं दरअसल " अली अकबर हकलाये। अब्बास को सयदा और अली अकबर की इस नोक झोक मे कोई दिलचस्पी नही थी ना वह किताबत किया हुआ फर्मा पढने लगा।

डाक्टर इशरत फारुकी प्रसिद्ध आलोचक के लेख म आठ पन्ने थे। शुरू के आठ पन्ने इससे पहलेवाले फर्मे मे थे ता उनके लेख 'उर्दू अदब और नेशनल इण्टिग्रेशन' के शुरू के पन्ने मूसवी के सामने नही थे। पर इधर वह यह देख रहा था कि उर्दू आलोचना फिसलकर नीचे गिरी जा रही है। अब कोई लेख मुश्किल ही से ऐसा लिखा जाता है जिसे पूरा पढा जाये। उर्दू आलोचना की अलमारियाँ आल अहमद सुरूर से अवसरवादी के पाकेट ऐडिशस स भरी हुई हैं। गालिब पर मुमताज हुसन की किताब के बाद से अब तक कोई महत्वपूर्ण किताब नही लिखी गयी है। वास्तव म उर्दू आलोचना लेखा की आलोचना है जिन्ह लिखने मे पित्ता नही मारना पडता—याददाश्त स काम चल जाता है और शायद यही कारण है कि उर्दू आलोचना काव्य-आलोचना ज्यादा है और साहित्य-आलोचना कम। वही तीन चार सौ शे'र है जिन्हे हर आलोचक घुमा फिराके अपने लेखो बदन पर यहाँ-वहाँ टाकता रहता है। मानो शे'र न हो सलीब की मेखें हो जिन पर लेखों के मसीह टाँग जाते हैं।

अब कहने को तो यह डा इशरत फारुकी साहित्य के आचार्य है पर नेशनल इण्टिग्रेशन का अर्थ हिन्दू-मुस्लिम एकता समझते हैं। राष्ट्रीय समा-कलन को धर्म से क्या लेना-देना। हसरत मोहानी ने श्रीकृष्ण पर चार

तक कह दिया— कमाल है यार। तीन बच्चा की माँ हो गयी और अभी तक ठीक से लडना तक नही आया ' मादो की गलिया म घूमते घूमते वह जब उस जगह पहुँची तो उसे फिर हँसी आ गयी

क्या हुआ भई ?"

"तीन बच्चों की माँ हो गयी और अभी तक ठीक से लडना तक नही आया।" सैयदा न नक्ल की और दोनो हँसने लगे।

' वहीद का खत्ना मत करवाव।

' अर यार तुम्हारी मर्जी के खिलाफ कभी कुछ हुआ है इस घर म।" मूसवी ने कहा—"मैं तो यू ही जरा अपनी झल्लाहट उतार रहा था, झल्लाहट भी एक डायनमिक वल्यू आफ लाइफ है।

माई डियर की किताबत किये हुए फर्मे लेकर अली अकबर कातिब आ गये।

सैयद अली अकबर जाफरी बिलगिरामी न झुककर सलाम किया।

"आइए मीर साहब!" मूसवी न अपने पासवाली कुर्सी को थपथपाया। "यहाँ तशरीफ रखिए।"

अली अकबर न तशरीफ रख दी।

नागपाडे म तो सब ठीक-ठाक है ना।"

वहाँ क्या होगा साहब। 'अली अकबर न कहा। "हाजी सुलतान और इसमाईल ममन न जेल म बैठे-बठे असलहे तक्सीम करवा दिये और मराठो और पुलिस, दोनो को यह मालूम करवा दिया गया कि अब मुसलमान मरने मारन पर तयार है और मरनवाले स तो एक बार मलकुलमौत भी डर जायें।' अब अली अकबर ने आवाज दबायी और राजदाराना लहजे मे कहने लगे। यह भी खबर मिली है कि हफ्ते अशरे म जनरल साहब की फौजें खास बम्बई मे धरी होंगी।"

"अच्छा!"

"ऐ बस रहन भी दीजिए अक्बर साहब ! ' सैयदा न कहा। 'जनरल साहब की फौजे बम्बई मे धरी हागी। तब तो वह शिवाजी पाक म तकरीर भी करेंगे। आप लोगा की यही बात मुझे अच्छी नही लगती। हिदुस्तान पाकिस्तान म हाकी का मैच हो ता आप पाकिस्तान के लिए ताली वजायेंगे और फिर शिकायत करेंगे कि हिन्दू यहाँ हम जीने नही देता।

"नही दुल्हन साहिबा, मैं दरअसल " अली अकबर हक्लाये। अब्बास को सैयदा और अली अकबर की इस नोक झोक मे कोई दिलचस्पी नही थी ता वह किताबत किया हुआ फर्मा पढने लगा।

डाक्टर इशरत फारकी प्रसिद्ध आलाचक के लेख के आठ पन्ने थे। शुरू क आठ पन्ने इससे पहलेवाले फर्मे म थे तो उनके लेख उर्दू अदब और नेशनल इण्टिग्रेशन' के शुरू क पन्न मूसवी के सामन नही थे। पर इधर वह यह देख रहा था कि उर्दू आलोचना फिसलकर नीचे गिरी जा रही है। अब कोई लेख मुश्किल ही से ऐसा लिखा जाता है जिस पूरा पढा जाय। उर्दू आलोचना की अलमारियाँ आल अहमद सुरूर से अवसरवादी के पाकेट ऐडिशस से भरी हुई हैं। गालिब पर मुमताज हुसैन की किताब के बाद से अब तक कोई महत्वपूर्ण किताब नही लिखी गयी है। वास्तव म उर्दू आलोचना लेखो की आलोचना है जिन्ह लिखन म पित्ता नही मारना पडता—याददाश्त स काम चल जाता है और शायद यही कारण है कि उर्दू आलोचना काव्य-आलाचना ज्यादा है और साहित्य-आलाचना कम। यही तीन चार सौ शे'र है जिन्ह हर आलाचक घुमा फिराके अपन लेखो-बदन पर यहाँ-वहाँ टाकता रहता है। माना शे'र न हो सलीब की मखें हो जिन पर लेखों के मसीह टाँग जात हैं।

अब यहन को तो यह डा इशरत फारकी साहित्य में आचाय हैं पर नेशनल इण्टिग्रेशन या अय हिन्दू मुस्लिम एकता समस्त हैं। राष्ट्रीय समा मलन को धम स क्या लना-दना। हसरत मोहानी न श्रीकृष्ण पर चार

कविताएँ लिख दी। चकबस्त ने एक मरसिया लिख दिया। किसी ने कसीदे म यही कह दिया कि—

सिम्ते काशी से चला जानिबे मथुरा बादल।

किसी मर्सिय मे आ गया कि 'फूल वह जा महसर चढ़े'। किसी नजीर अकबरवादी ने होली दीवाली पर कविताएँ लिख दी और नेशनल इण्टिग्रेशन हो गया। अरे भाई जो नशनल इण्टिग्रेशन हो गया तो अभी भिवण्डी थाणे कल्याण और आमची मुम्बई मे दगे क्यो हुए ?

नेशनल डिसइण्टिग्रेशन की जड़ें कोई देश की आर्थिक बदहाली म नही ढूढता। नेशनल डिसइण्टिग्रेशन की जडो को इस राजनीतिक स्थिति मे नही ढूढता कि हमारे लोकत त्र म आज तक ऐसी सरकार नही बनी है जिसे मत दाताओ के बहुमत का सहयोग प्राप्त हो और जा धम, जातिवाद और क्षेत्र वाद के नाम पर न बनी हो। चुनाव के पोस्टर तो झूठे है जो एकता की बात करते हैं। वोट तो रात के अँधेरे म माग जात है—बस्तियाँ जलान की धमकी दकर। गुण्डो की छत्र छाया मे। जाति और धम के नाम पर। इन्ही आधारो पर कण्डिडेट चुने जाते है और इन्ही आधारो पर वह जीतते या हारते है।

आजादी के बाद जो असन्तोष का नया मौसम आया वह अभी तक खत्म नही हुआ। निकट भविष्य मे खत्म होता दिखायी भी नही दे रहा है—

और डाक्टर इशरत फारुकी उर्दू अदब म नेशनल इण्टिग्रेशन' का आइना लिय घूम रह हैं।

मूसवी के मुह का मजा खराब हो गया इसीलिए अब उसने लेख के आखिर म सयद अली अकबर जाफरी के हस्ताक्षर देखे तो भडक उठा। अली अकबर ने 'जवाहर कलम अली अकबर जाफरी' लिखा था।

अरे भाई अली अक्बर साहब !" उसने कहा—"आप तो लगता है

कि जवाहर कलम बनने के लिए जर्रीकलम के कत्ल का इंतजार कर रहे थे।"

सैयदा घबरा गयी। उसने मूसवी का इतना कडवा कभी नही पाया था।

अली अकबर भी हकलाने लगे।

"यह निहायत वेहूदा बात है।" मूसवी तेज खंजर की तरह अली अकबर के आत्माभिमान के सीने मे उतर गया।

उसने वह फर्मा अली अकबर को यह कहकर लौटा दिया कि वह 'जवाहर कलम' काट दें।

अली अकबर मुह लटकाये चले गये।

' तुमने बिचारे अक्बर साहब को क्यो थिझोड खाया।'

"दातो मे खुजली हो रही थी।" अब्बास ने जवाब दिया। ' हम अपने हालात के कैदी है सैयदा ! कैदी होने का मतलब यह नही कि हम मजबूर हैं क्योकि इन्सान ने जब से होश सँभाला है, जजीरो को तोडता चला आ रहा है। हमारे जमाने के इन्सान की ट्रेजेडी यह है कि उसने मान सा लिया है कि यह जजीरे उससे नही टूटेगी। गालिब ने ठीक कहा था— गर क्या, खुद मुझे नफरत मेरी औकात से है। मै अपने ख्यालो से आँख मिलाते डरने लगा हूँ क्योकि उनकी आँखो मे छोटी वडी अनगिनित शिकायतें है। वह पूछते हैं हम देखा ही क्यो था। और मेरे पास उनके इस सवाल का कोइ जवाब नही है "

सैयदा सन्नाटे मे थी। चुपचाप सुन रही थी। उसे पता नही था कि उसका प्रियतम उसका पति इतना घायल है।

' वहीद का खत्ना करवा डालो।" उसने बहुत देर के बाद कहा।

'वहीद का खत्ना मेरी झल्लाहट का इजहार है सयदा।" उसने सैयदा की गोद मे सर रख दिया। "किसी सवाल का जवाब नही है। हम तमाम

लोग सवालो के जगल म अकेले हो गये हैं और रास्ता भूल गये हैं ।"

सयदा उसके धूप म जले हुए बालो को अपनी ओस की उँगलियो स सुलझाती रही या अल्लाह ! अब्बास की आवाज पर कडवाहट और पराजय की यह धूल न जमन दे फातमा, माजिद और वाहिद का मैं कडवाहट का यह जहर चटाकर पालना नही चाहती। मुझे सन्त जरनैल सिंह भिण्डरावाले सरदार खुशवन्त सिंह, बाल ठाकरे, बनातवाला, शाही इमामो या देवरसा से क्या लेना देना। मुझे तो अपने घर के नीचे स बहने वाली गगा न कभी हिन्दू लगी न मुसलमान। मुझे हरिशकरीवाला बूढा मन्दिर भी कभी कट्टर हिन्दू नही दिखायी दिया। मुझे घर के पिछवाडी जिनो की मस्जिद न कभी कुरान नही सुनाया। फिर भी केदार हिन्दू-मुसलमान दग म मारे गये। मुस्लिम लीग के कट्टर विरोधी, हिन्दी म शायरी करनेवाले सिटी हायर सेकेण्डरी स्कूल म विद्यार्थियो को सूर तुलसी और मीरा पढानेवाले अली हैदर भाई हिन्दू मुसलमान दगे मे मारे गये। सुलेमान चा मुसलमान गुण्डो को हथियार बाटते पकडे गये यह सब क्या हो रहा है। आखिर मतलब क्या है इन बातो का। हमारी पहचानें, पर छाइयो क इस जगल म कहाँ भटक रही है परवरदिगार

सवाल, सवाल और सवाल

अल्लाह !

भगवान !

खुदा बाप !

वाह गुरु !

सब कैजुअल लीव पर हैं। या शायद सिक लीव पर।

कुशलता खरियत वैल बीइग अक्षरो का एक जाल। अर्थहीन। बेमानी ! सूरज भी जैसे मुह लपेटकर अधरे की किसी खाई म पड गया है। और—

चांद भी वठ रहा जाके किसी गोशय तनहाई म।

'वाह वाह वाह " डाइगरूम से तारीफ का एक रेला आया। इस शोर मे फातमा की उन्नीस बरस की हँसी की चांदी घुली हुइ। अब्बास कहा करता था कि फातमा को अल्लाह मियाँ ने सयदा की हँसी का डुपलिकेट दे दिया है। इसीलिए फातमा की हँसी सुनकर उस एक बडी खुदगरज सी खुशी हुआ करती थी। अच्छा तो यह मैं हँस रही हूँ।

'अब्बू!' बच्चो की आवाज आयी और सैयदा चालीस बरस की सैयदा तीन बच्चा की मा सैयदा सोने के कमरे से डाइगरूम की तरफ नगे पाव यू भागी जस बच्चे कोई बारात दखन के लिए दरवाजे या छत की तरफ भागते हैं।

फातमा उस देखकर सोफे स कालीन पर उतर आयी। वह बैठ गयी। शहीद उसकी गोद म घुसड गया।

मूसवी कह रहा था— साहिबे शे'र कहन को जी नही चाहता। वजह बताऊँगा ता विचारे बम्बई टी वी वाले मुसीबत मे फँस जायेगे।"

बम्बई दूरदशन ने यह मुशायरा इसलिए किया है ताकि उसके नाजिरीन का यह यकीन दिला दिया जाये कि बम्बई जिन्दा है और खरियत से है। इसलिए नज्म का उनवान है—कलकत्ता मर रहा है। म इस छोटी सी बेईमानी के लिए क्षमा चाहता हूँ। कलकत्त के मरने की खबर जरा बाद की है।

> न जाने कौन सा अखबार था वह
> किसी नता का एक भाषण छपा था
> कि कलकत्ता तो कबका मर चुका है
> कि शायद मर रहा है
> मुझे मिलता जो वह नता,
> तो उसस पूछता इतना

कि भैया यह बता दो
कि इस हिन्दूस्ताँ
जन्नत निशाँ म
कोई जिन्दा नगर
बस्ती
मुहल्ला
किस तरफ है ?
जिसे हिन्दूस्ता कहते हैं हम सब
वह हिन्दूस्ता नही है
वह मुर्दा बस्तियो का एक कब्रिस्तान है अब
वह एक श्मशान है अब।

सण्डे मैगजीना म अब समीभको ने इस मुशायरे की बात की ता अब्बास मूसवी पर सबका नजला गिरा।

कि उसकी काव्य शली का रस सूख गया है। उसके शब्द अब केवल शब्द हैं जबकि काव्य कला का आधार शब्द नही चिह्न है।

कि उसकी कडवाहट उसकी थकन और हार का प्रतीक है।

' यह 'प्रतीक' क्या हाता है ?" सैयदा ने पूछा।

"सिम्बल माई डियर, सिम्बल।" फात्मा ने रिकाड प्लेयर पर माइकल जक्सन का कोई रिकाड लगाते हुए कहा।

'और 'सिम्बल' क्या होता है ?" यह मूसवी न पूछा।

'प्रतीक माई डियर अब्बू ! प्रतीक !" माजिद ने 'स्पोट स एण्ड पास टाइम मे गवासकर की तस्वीर को गुस्स स पलटते हुए कहा। "अब्बू मुझे यह गवासकर बिलकुल अच्छा नही लगता।" और उसने अपने ट्रान्जिस्टर का वाल्यूम जरा बढा दिया।

क्यो भई ?"

"ही इज अनस्पोर्टिंग !"

"इतना तो अच्छा खेलता है।" वाहिद ने कहा।

"उसको अब ओपिन नहीं करना चाहिए।" फात्मा ने एक विशेषज्ञा की तरह अपना फैसला सुना दिया। "वह जरा स्लो हो गया है। आफ्टर आल एज इज टेलिंग अपॉन हिम।"

'अरे फात्मा" सैयदा किचन से ड्राइंगरूम में आते हुए बोली— 'मैं तुम्हें बताना भूल गयी थी। सैण्डी का फोन आया था।" उसने खाने की मेज़ पर चाय की केतली रखते हुए कहा—"पर नाश्ता करने के बाद फोन करना क्योंकि तुम तो चिपक जाती हो फोन से।" यह कहती हुई वह किचन में चली गयी और फात्मा ने लपक के सण्डी का नम्बर डायल किया।

"हाय सण्डी तुमने फोन किया था? ओह कम आन यार प्लीज माजिद !" वह चीखी, "यह म्युज़िक बन्द करो।"

'देखा अब्बू," माजिद ने बाप से गिला किया। "रिकार्ड खुद लगा के गयी थी और चिल्ला रही है मुझ पर !" उसने अपने ट्रांजिस्टर से कान हटाया, जिस पर बड़े गुलाम अली खाँ की ठुमरी सुन रहा था—

रात अँधेरी डर लागे

और वाहिद जो टहल टहलकर अपनी तकरीर याद कर रहा था। जो वह कल अपनी क्लास की डिबेट में करनेवाला था।

"मिस्टर प्रेसिडेण्ट, सर
एवरीबडी नीडस ए गौड
एण्ड ए मदर मिस्टर प्रेसिडेण्ट,
सर एवरीबडी नीडस ए गौड एण्ड
ए मदर गौड इज़ वर्शिप्ड
मदर आर लव्ड,
आई वर्शिप माई गौड एण्ड लव

माई मदर   मिस्टर प्रेसिडेण्ट, सर
"

कमरा आवाजों का एक जगल था। माईकेल जक्सन का गाना। बडे गुलाम अली खाँ की ठुमरी, वाहिद की तकरीरें और टेलीफोन पर सैण्डी से फातमा की बात।

अब्बास इस जगल की मीठी, प्यार करनेवाली खनकती, वजती हुई हवा खा रहा था और सयदा को देखे जा रहा था जो किचन से डाइनिंग टेबिल तक लगातार यात्रा कर रही थी और नाश्ता लगा रही थी

" नो यार प्रदीप तो वडा सीधा है। दैट विच मीनू कपाडिया उस बिचारे की लैंगपुलिंग कर रही है   शी वाज मोर लाइक ए ब्यूटी क्वीन, फ्रौम ए मूवी सीन

"आई सैड आई डोण्ट माइन्ड बट व्हाट डू यू मीन"

"रात अँधेरी डर लागे "

"एवरी बडी नीडस ए गौड

"एण्ड ए मदर "

'और फादर के बारे मे क्या खयाल है जनाब ?" मूसवी ने पूछा।

सैयदा जो फातमा का आमलेट, माजिद के तले हुए अण्डे और वाहिद के भीगे हुए चने लेकर आयी थी हँस पडी।

"जल गये,' वह चीजें रखने लगी। "अल्लाह के वाद माँ ही लाजवाब है मिस्टर!"

सैण्डी की कोई वात सुनकर फातमा जोर से हँसी। "डोण्ट टल मी, यार! वह हल्क क्या उस मिस मैचस्टिक से रीअली लव कर रहा है। वेरी स्ट्रेंज कपुल यार "

इस वीच म वाहिद आकर मूसवी की गोद म घुसड गया और कान मे वोला 'यह जा हमारी मदर सुपीरियर हैं न अब्बू फादरो से जलती हैं।

फादर रोड्रिक्स तक से। उससे कोई मैरेज नही करता ना।"

मूसवी बेसाख्ता हँस पडा।

"अच्छा हँसना बाद मे।"

सयदा शोर के ऊपर चढकर बोली। 'अरे इस म्युजिक पर अल्लाह की मार हो।" उसने म्युजिक सिस्टम ब द किया और फिर माजिद के हाथ से ट्राजिस्टर छीन के ब द कर दिया। फिर उसने फातमा के हाथ से रिसीवर छीन लिया और बोली—"सैण्डी, शी विल रिंग यू बैक डार्लिंग।" फिर उसने फातमा का डाइनिंग टबिल की तरफ धक्का दिया। "टेलीफोन पर तुम लोग इतनी इतनी देर तक बातें कर कैसे लते हो। चलो नाश्ता करो "

'लीजिए वाहिद साहब।" मूसवी ने अँखुवेदार चनो का प्याला वाहिद की तरफ बढाया "सेहत बनाइए ।"

' अब्बू आई प्रोटेस्ट " फातमा ने बैठते हुए कहा।

"अब्बू के साथ आई प्रोटेस्ट अच्छा नही लगता।' मूसवी ने कहा—वैसे अंग्रेजी बहुत बडी जुबान है ।"

वाहिद न अपनी जवान दिखायी और पूछा— 'इससे भी बडी ?"

सब लोग हँसने लगे। पर तु अपने खयाल मे वाहिद ने बहुत गम्भीर प्रश्न किया था तो वह बडी गम्भीरता के साथ चने मे लेमू निचोडने मे लग गया था।

"लो भई खुश हो जा।" मूसवी ने दरवाजे तक आकर 'टाइम्स आफ इण्डिया' उठाकर उसकी हड लाइन देखते हुए कहा। "तुम्हारी मिसेज गाँधी ने तो ऐलान कर दिया कि हि दुस्तान म रीजनलइजम और कम्युनलइजम के लिए कोई जगह नही है।" वह अपनी कुर्सी पर आ बठा। ' तो अब तो हि दुस्तान सेकुलर हो गया।"

' तुम ता जलत हो मिसेज गाँधी से।" सैयदा बोली—"पर हि दु

स्तानी मुसलमान मिसेज़ गांधी के साथ न जायें तो किसके साथ जायें ?"

अब्बू ! ' वाहिद बोला "कल मैं स्कूल मे पी पी कर रहा था तो वह जो मेरा फ्रेण्ड गुलाटी है ना यह आ गया और उसन मेरी पीपी देख ली। बोला, 'तुम्हारी पीपी तो हमारी जसी है। हिन्दू ' क्या मेरी पीपी हिन्दू है ?"

'नही बेटे !" मूसवी न बडी गम्भीरता से कहा—' पीपियाँ हिन्दू मुसलमान नही होतीं।'

' फात्मा के सामन ऐसी बात करते शर्म नही आती।' सैयदा बरसी।

"अगर तुम फात्मा के साथ वह हिन्दी फिल्म देखत नही शर्मातीं जिनमे एक-आध रेप जरूर होता है और दुहरे मतलबवाले गन्दे डायलॉग बोले जाते है तो मैं वाहिद से "

' अच्छा-अच्छा ठीक है। ' सैयदा ने बात काटी। 'नाश्ता करो।

वह लोग नाश्ता करने लगे।

कि दरवाज़े की घण्टी बजी।

"मैं देखता हूँ।" मूसवी ने उठते हुए कहा।

' यह राम मोहन तो बाजार जाकर वही का हो जाता है।" फात्मा बडबडायी।

मूसवी ने दरवाजा खोला।

धर्माधिकारी अन्दर आया।

'आज तो कमाल हो गया भाई। नमस्ते भाभीजी। पजाब म अकालियो ने कल न किसी हिन्दू को मारा न किसी निरकारी को।"

हिन्दुस्तान के हिन्दुओ ने कल किसी मुसलमान को भी नही मारा। धर्माधिकारी अक्ल आज का पेपर बिलकुल ड्राईक्लीड आया है।'

धर्माधिकारी ज़ोर से हसा और मेज की तरफ आते हुए बोला— चोट कर गयी बिटिया।' वह एक कुरसी पर बठ गया। 'एक चाय मिलेगी

भाभीजी !"

भई तुम मुझे 'जी' न कहा करो।" सयदा ने झल्लाकर कहा। "गांधी-जी, मोरारजी और भाभीजी कोई बात हुई !"

"अब्ल" वाहिद ने कहा— क्या हिन्दूज एण्ड मुसलिम्ज की पीपीज अलग-अलग होती है।"

धर्माधिकारी चकरा गया। माजिद ने वाहिद को जोर से कुहनी मारी

ईडियट !"

"आप-खुद ईडियट।" वाहिद ने कहा।

उस घर में वाहिद की मान जान जरा ज्यादा थी कि वह तेरह बरस का बच्चा होकर बिना नोटिस दिये आ गया था।

सयदा तो उसके पेट में आने से इतना शर्मायी थी कि फातमा और माजिद से आंख नहीं मिला पाती थी और यह दोनों उसके शर्माने का मजा लिया करते थे।

पेट छिपाते छिपाते सैयदा का बुरा हाल हो गया था। फातमा जब उसके पास बैठती कोई न कोई मौका निकालकर उसके पेट को चूम लिया करती —माजिद आता तो उसके पेट को सहलाने लगता, वह उसके हाथ को हटाते हटाते माजिद को ढकेलते-ढकेलते थक गयी थी।

दिन भर का सारा गुस्सा वह अब्बास पर उतारा करती थी। वह हजार बार कह चुकी थी कि यह बच्चा गिरा दिया जाये पर अब्बास नहीं मानता।

'क्या बात करती हो यार।" वह कहता—"दो ही बच्चे रहे तो हम फमिली प्लानिंगवाला का इश्तिहार होकर रह जायेंगे। और यूं भी जैसे कार में स्टेपनी होती है ना, एक बच्चा सरप्लस रहे तो अच्छा ही है। क्या पता हम दोनों के अरमानों के लिए दो बच्चे कम ही पड़ जायें "

जाहिर है कि ऐसी बातें सुनकर वह हँस पडा करती थी

चुनांचे एक रात साढे-तीन बजे सैयद मुहम्मद वाहिद मूसवी साहब पैदा हो गये।

उसी रात, कोई घण्टा भर बाद, उसी अस्पताल म धर्माधिकारी की पहली बच्ची भी पैदा हुई? जिसका नाम अब्बास के सुझाव पर स्वाति रखा गया।

धर्माधिकारी चूकि पहली पहली बार बाप बन रहा था इसलिए उसके हाथ पाँव जरा फूले हुए थे। अब्बास चूकि दो बार बाप बनन की घबराहट का मजा चख चुका था इसलिए वह धर्माधिकारी को ढाढस बँधा रहा था

और यूँ धर्माधिकारी और अब्बास की दोस्ती शुरू हुई थी।

धर्माधिकारी पेशे के एतबार से पत्रकार और विचारधारा के एतबार से प्रगतिशील था। पर वह प्रगतिशीलता को सी पी (एम) या सी पी (आई) का दुमछल्ला मानने पर तैयार नही था। इसीलिए जब प्रगतिशील लेखक सघ के मुर्दे म तीसरी बार जान डालन का प्रयत्न शुरू किया गया तो इस शुभकाय का मुहूत धर्माधिकारी को प्रगतिशील लेखक सघ से निकालकर किया गया।

"इन नम्बर दो के प्रगतिशीलो से भगवान ही लिटेचर को बचाये तो बचाये। शिकायत तो मुझे कैफ़ी साहब से है। अपने नौकरो की माँ बहन एक करनेवाले मजरूह साहब तो प्रगतिशील और मैं टाट बाहर!"

' मजरूह नही।" अब्बास बोला। "मजरूह ज के पीछे बिन्दी नही।"

सुना है कि सरदार जाफरी कोई महाकाव्य लिख रहे हैं।" धर्माधिकारी ने जलके जाफरी के 'ज' के नीचे बिन्दी ठोक दी और अब्बास को घूरने लगा।

पर अब्बास मुसकुरा के चुप रह गया क्योकि नम्बर दो के प्रगतिशीलो

को वह भी भुगते बैठा हुआ था।

"कलम साफ करते नही, बन्दूकों की सफाई मे लगे रहते हैं।" धर्माधिकारी का ताव अभी उतरा नही था।

"यार बको मत।" मूसवी न कहा। "मजरूह साहब बन्दूकें साफ करते रहन के सिवा अच्छे और साफ-सुथर शे'र भी कहते हैं। टाँडे की जामदानी म मेहनत देखो यार। उनका एक-एक लफ्ज जामदानी की बूटी की तरह होता है। नाजुक साफ और अपने आप पर भरोसा रखनेवाला।"

'सुना है आजकल इगलिश पढना और बोलना सीख रहे हैं।"

मूसवी हँस पडा।

'हाँ, एक दिन मैं गया तो दास्ताव्स्की पढ रहे थे, बगल मे डिक्शनरी रक्खे हुए और इग्लिश बोल भी रहे थे। आई ता बेटा मार्क्सिस्ट हूँ।' वाली अगरेजी।"

धर्माधिकारी खिलखिलाकर हँस पडा ।

"आज बहुत दिनो बाद मजरूह साहब से मिलना हो गया।" धर्माधिकारी ने सैयदा से चाय की प्याली लेते हुए कहा। "बहुत खफा थे सरकार से। बोले—'इट इज नाट डन धर्माधिकारी। भैया, मैं तो राजपूत हू। मेरा तो खून खौल जाता है। बडे-बडे लेफ्टिस्टो को देख लिया, जिसकी दुम उठाओ, वही मादा। और मुझे तो दरअसल मिसेज गाँधी पर गुस्सा आ रहा है।' उनके साथ सूरत शक्ल से प्रोग्रेसिव लगनेवाले कोई साहब भी थे। वह बाले— और क्या! अगर सऊदी अरब की फौज खानये काबा मे घुस सक्ती है तो हमारी फौज गोलडन टेमपल मे क्यो नही घुस सक्ती ' तो मैंन कहा— मिसेज गाँधी शायद आपकी राय ही का इतजार कर रही हो। अब आपने राय दे दी तो स्वण मन्दिर मे फौजें जरूर उतार देंगी?'"

अब्बास खिलखिला के हँस पडा।

'अकिल, मेरे सवाल का जवाब तो दीजिए।"

वाहिद उन सबको हिन्दू मुसलमान पीपियो तक घसीट लाया। 'जब मैं मुसलिम हूँ तो मेरी पीपी मुसलिम क्या नही है "

वाहिद की चार, साढे चार बरस की समझ वही टिक गयी था।

फात्मा मुह बनाकर मेज स हट गयी।

नाश्ता तो कर लो।" सैयदा ने कहा।

इसका सवाल खतम हो जान दीजिए।' फात्मा न कहा। वलगर। गन्दा।'

'जी हाँ।" वाहिद चमका। 'और आप जो उस दिन रवि भाई को किस दे रही थी, वह कुछ नही।'

कमरे म सन्नाटा छा गया। वाहिद अपन अँखुवदार चन खान लगा। धर्माधिकारी अपनी जेब म सिगरेट ढढन लगा जो कभी उसकी जेब मे होती ही नही। मूसवी न अखवार उठा लिया। सयदा न फात्मा को गुस्से से देखा

अब्बास गुस्स भरी उस निगाह का मतलब समझ के उदास हो गया। वह जानता था कि सैयदा चुम्बन पर नही खफा थी रवि पर खफा थी

यही सैयदा माजिद का सगीता का नाम लेकर छेडा करती थी। सगीता की वडी खातिर भी करती। एक बार वगलौर गयी ता सगीता के लिए खास तौर पर प्योर सिल्क का शलवार कमीज के सूट का कपडा लायी।

और एक दिन जब उसन माजिद और सगीता का नेकिंग करते देखा तो घबरा के दरवाजा बन्द कर दिया।

'तुम पर अल्ला की मार हो माजिद ! अरे बेशरम दरवाजा तो बन्द कर लिया होता।"

रवि और सगीता भाई बहन थे। पासवाली 'सागर दशन कुआपरेटिव हाउसिंग सोसायटी' के तीसरे माल पर विष्णु महरोत्रा का ओनरशिप फ्लट

था। 1500 स्क्वायर फीट का। तीन बेडरूम, एक गेस्ट रूम। चारो कमरो के साथ अटेच्ड बाथरूम! तीन टेलीफोन, एक नौकर एक कटका करनेवाली बाई, एक बरतन माँजनेवाली बाई। (यह दोनो दो घण्टे रोज काम करती थी) फिर एक शफी ड्राइवर। दा कारें। एक कार शफी चलाता और दूसरी को रवि या कभी-कभी सगीता। महरोत्राजी ने घूस खिला क सगीता का ड्राइविंग लाइसेंस 'निकलवा' दिया था।

काग्रेस म विष्णुजी की यह तीसरी पीढी थी। उनके दादा श्रीकृष्ण महरोत्रा स्वर्गीय रफी अहमद किदवई के साथियो मे थे। कई बार जेल जा चुके थे। विष्णुजी का फमिली अलबम राष्ट्रीय इतिहास की कोई किताब लगता था।

दादाजी गाँधीजी के साथ।

यह पण्डितजी किदवई दादा जयप्रकाश नारायणजी और दादाजी।

दादाजी आचाय नरेन्द्र देव के साथ।

पिताजी डॉ लोहिया अरुणा आसिफ अली।

और यह देखिए मजे का ग्रुप।

यह हैं श्रीमती कमला नहरू, यह है श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित और कमलाजी के पास जो गुडिया खडी है यह है प्रियदर्शिनी इन्द्रा गाँधी। यह मेरी माँ। यह मेरी बुआ। कमलाजी इन्ह सुभद्रा बहन पुकारा करती थी। यह है अनीसा किदवई यह रही सुभद्रा जोशी। और यह श्रीमान जो सर घुटाय चौकी पर बठे है यह मैं हूँ। मरे मुण्डन पर यह भीड लगी थी।

यह लडका भी मैं ही हूँ जिस बापू आशीर्वाद दे रहे है। दादाजी मुझे खासतौर स इस आशीवान्द के लिए वर्धा ले गय थे।

बी सी राय, सी राजगोपालाचारी, अब्दुल गफ्फार खान आचाय कृपलानी, पुरुषोत्तम दास टण्डन, शेख अब्दुल्लाह, पण्डित मदन मोहन मालवीय, सरोजनी नाइडू सुभाषचन्द्र बोस, मुहम्मद अली जिनह

गरज कि कौन या जो उस अलवम मे नही था।

और उनके पिता श्री ओमवारनाथ मेहराश्रा ता तीसरी ससद म सहायक गृहमन्त्री भी रह चुके थे।

परन्तु जव कांग्रस म अक्षरो क दुमछल्ल लगने लगे ता श्री ओमकार-नाथ मिसेज गांधी क साथ कांग्रेस से निकलकर कांग्रेस(आई) म नही गय। वह पुरानी वल्कि असली काग्रेस म डटे रह।

परिणाम ?

ससद के चुनाव म वह कांग्रेस के टिक्ट पर हमेशा की तरह चुनाव लडे ? पर जमानत जब्त हो गयी।

पर वह फिर भी कांग्रेस ही म डटे रहे। चरणसिंह या बहुगुणा की तरह न उन्होने दल वदला, न ही कांग्रेस छाडी। अव भी मोरारजी देसाई बात-बात म उनसे राय मशविरा करते हैं।

परन्तु विष्णुजी वेचारे कारोबारी झझटो और मजबूरियो के कारण श्रीमती गांधी के साथ कांग्रेस से निकल और कांग्रस (आई) म जम गये।

परिणाम ?

कारोबार ने दिन दूनी, रात चौगुनी तरक्की की। जब चाह मुख्य मन्त्री के घर हो आयें।

और जब सजय गांधी का सूय उदय हुआ तो सत्तावन बरस चार महीन की उम्र म वह यूथ काग्रस के नेता हो गये।

कहने का मतलब यह कि उनके धर म सेकुलरइज्म की परम्परा चली आ रही थी। उनकी पत्नी श्रीमती फूलमणि दवी भी बडी कट्टर सेकुलर थी। सिफ हरिजनो और मुसलमानो के हाथ का छुवा नही खाती थी और इधर चार-पाँच साल से हर शुक्रवार को सन्तोषी माँ का व्रत भी रखने लगी थी

पर घर म चूकि बातें सदा ही सेकुलरइज्म की होती थी। इसलिए

सगीता और रवि पर साम्प्रदायिकता का साया नही पडा था। बल्कि सच्ची बात तो यह है कि गोमास खाने के चक्कर मे तो माजिद और रवि की दोस्ती हुई थी।

यह तो उसे बहुत बाद मे पता चला कि अब्बास के घर म तो गोमास खाया ही नही जाता। पर तब तक उसे फात्मा से और सगीता को माजिद से प्यार हो चुका था।

रवि और सगीता को अपन पिता विष्णु महरोत्रा की धमनिरपेक्षता पर तो अटल भरोसा था पर वह अपनी मा की तरफ स डरे हुए थे। छूत-छात माननेवाली कान्ता महरोत्रा भला एक मुसलमान बहू और एक मुसल मान दामाद को कैसे सहन करेंगी।

परन्तु फात्मा और माजिद को इस तरह का कोई डर नही था। सलमा फूफी हिन्दू से शादी किये बैठी हैं। बहाउद्दीन चा वाले मुरतुजा भाई एक सिखनी ब्याह लाये हैं। अली असगर मामूवाली ममानी वगालन है। उनके घर मे धम ही नही था तो धमनिरपेक्षता की जरूरत ही नही महसूस होती

हाय यह बच्चे।

यह अपन बुजुर्गों को कितना कम जानते है।

उस दिन रवि-फात्मा चुम्बनवाली बात पल भर तो खान की मेज पर धूल के धब्बे की तरह रही, फिर जैसे हवा धूल के उस धब्बे को उडा ले गयी। नाश्ते की मेज पर पुरानी चहल-पहल लौट आयी।

राम मोहन की पत्नी कौशल्याजी, बगल मे बच्चा दाबे राम मोहन के साथ आयी और आन की आन मे मेज साफ हो गया। पर वह बिचारी सैयदा के दिल से चुम्बन का घाव न साफ कर पायी।

अब्बास मूसवी ने यही मुनासिब जाना कि घर से निकल ही लिया जाये तो वह धर्माधिकारी के साथ निकल गया।

माज़िद अलबत्ता माँ के मूड पर हैरान था।

'ओह कम-आन अम्मा !" उसने कहा। "यह बीसवीं सदी का, आल-मोस्ट, एण्ड है मदर। एक किस म क्या रखा है।"

"किस म कुछ रखा कैसे नहीं है।" सैयदा न उसे झिडक दिया "खान दान की इज्ज़त रखी है।"

'व्हाट इज्ज़त मदर !" माज़िद न कहा। "चुम्मा क्या कोई अलमारी या सूटकेस है कि उसम घर की इज्ज़त तह करके रक्खी हुई थी।'

'फजूल बकवास मत करो जी।" सयदा ने कहा। 'और उस कम्बख्त का मुह चुमवाने के लिए वह एक हिन्दू ही मिला।"

'ओ हो हो।' माज़िद ने मेज पर हाथ मारा। 'तो बिन्दु यहाँ विश्राम करता है।' उसने माँ के हाथ पर हाथ रख दिया। 'सिस्टर उसे बहुत चाहती है मदर।"

'आग लगे उसकी चाहत मे "

उसका हाथ परे हटाते हुए सैयदा उठी और अपने कमरे म चली गयी।

माज़िद न अब एक सिगरेट सुलगायी। सयदा और अब्बास दोना को पता था कि वह सिगरेट पीता है। खुद माज़िद भी यह जानता था कि माता पिता को इसकी खबर है। अब्बास तो कभी-कभार गयी रात को सिगरेट की तलाश में उसके कमरे म आकर एक-आध सिगरेट निकाल भी ले जाया करता था। पर वह माता पिता के सामन सिगरेट नहीं पीता था। आज भी जो बात इतनी गम्भीर न हो गयी होती तो शायद सिगरेट पीने के लिए वह कब का अपन कमरे मे जा चुका होता।

सिगरेट के दो एक लम्बे कश सूतने के बाद वह अपने कमरे की तरफ चला गया।

वास्तव मे वह कमरा माज़िद और फातमा दोनो का था। फ़ातमा का

हिस्सा सलीके से साफ सुथरा रहा करता था और उसका हिस्सा उसी की तरह बेपरवा।

राम मोहन कह रहा था--"दुलहिन त बिलकुल ठीकै खफा भई हैं। देखो बहनी, अँगरेजी पढ़ाई और चीज है। मुदा धरम ? ऊ बिलकुलै दुसरी चीज है। पढाई अँगरेज की औ धरमें अपनो अपनो।"

"तुम चुप रहोगे कि नही राम मोहन।" फात्मा बरस पडी। माज्रिद पर निगाह पड गयी। 'देख रहे हो जब से दिमाग चाटे जा रहा है।"

"अरे तोरा दिमाग कोई मलाई बरफ या फिरनी नही है कि हम ओके चाटेंग।" राम मोहन भी बरस पडा "कायदे की बात समझा रहे तो खौखियाय लगती है।' राम मोहन अपने बदन से नमक झाडता हुआ कमरे से निकल गया।

"इस वाहिद के तो मैं टुकडे उडा दूगी।"

"ओह सिस्टर।" वह फात्मा के साथ लेट गया।

"मगर अब्बू खफा नही हुए।" फात्मा बोली। "अम्मा तो, शी इज़ वेरी ट्रडीशनल।"

'मेरी और सगीता की शादी की बात तो बडे मजे ले लेकर करती हैं।"

"दिस रेलिजन ही इज़ अ थर्ड रेट थिंग यार।"

जब कुछ नही था।
तो शब्द था।
शब्द भगवान है।
और खुदा बाप ने कहा
रोशनी हो जाय

और रोशनी हो गयी।

कुन, फयकन
(उसने कहा हो जा।
बस हो गया।)

न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता तो खुदा होना
डुबोया मुझको होने ने, न होता मैं, तो क्या होता।

इस होने और न होने के बीच मे एक दरिया है। कोई उसे जुदाई का दरिया कहता है, कोई मिलन का। परन्तु वास्तव मे वह समय का दरिया है। न वह जुदाई जाने न मिलन।

नीदो के चूल्हे पर
आखो की हाँडी मे
मेरे अन्दर का 'मैं'
सपने पकवाता है
कुछ सपने तो बिलकुल कच्चे रह जाते हैं
और कुछ जल जाते हैं
मेरे अन्दर का मैं भूका रह जाता है।

"मैं अपने अन्दर के इस 'मैं' को कैसे समझाऊँ कि भाई मेरे किये कुछ नही होगा " अब्बास न सामनेवाली दीवार से कहा और दीवार न वही बात किरमिच की गेंद की तरह उसकी तरफ लौटा दी।

इन बच्चो को कौन समझाये कि इश्क कोई आसान काम नही है क्योंकि इश्क तो न खेतन ऊपजे और न हाट विकाय।' उन्नीस बरस की फात्मा, इक्कीस बरस का रवि उसे घर जाते डर लग रहा था।

अकबर मासिक 'अदब के सम्पादकीय के दो पन्ने लेकर आ गये। इन

पन्नो का आज ही प्रेस जाना जरूरी था।

पहला पन्ना प्रेस जा चुका था।

मैं दो नम्बर के तरक्कीपसन्द अदीबो से बहुत घबराता हूँ। क्योकि उनके पास ब्लैक साहित्य और ब्लैक-आलोचना का बहुत बडा खजाना है।

आपको याद होगा बहुत दिन हुए अली सरदार जाफरी की किताब तरक्की पसन्द अदब' छायी हुई थी।

उस किताब म जाफरी अपने साथियो मे स अली जवाद जैदी का नाम लेना बिलकुल भूल गये। क्योकि जैदी ने दूसरी जग को कौमी जग मानने से इनकार कर दिया था।

उस किताब मे वाकर महदी, खलीलुरहमान आजमी, अजुम आजमी, तेग इलाहाबादी, अखतर पयामी, राही मासूम रजा, मजर शहाब, मजहर इमाम और जावेद कमाल जसे किसी नौजवान शायर का जिक्र नही था।

दूसरा ऐडिशन छपा तो यह लोग फुटनोट मे आ गये जबकि इनमे से हर शायर मजरूह सुलतानपुरी से अच्छा शायर था।

इन शायरो की शायरी म दिल भी था और दिमाग भी जबकि मजरुह साहब के यहा दमाग ही दमाग है—और दमाग भी क्या

"नही साहब" उसने अकबर साहब से कहा—"यह नही चलेगा"

उसने वह किताबत किये हुए दोनो वरक फाड दिये।

"प्रेस को फोन कर दीजिए कि पहला फर्मा कल आयगा।" वह घर जाने के लिए खडा हो गया। "आज रात को लिख दूगा।"

वह आफिस से बाहर आ गया।

बम्बई अपनी सडको पर हर तरफ भागता फिर रहा था।

वह पदल चल पडा।

उसे अपने आप पर गुस्सा आ रहा था क्योकि वह जानता था कि उसके सम्पादकीय म झल्लाहट ज्यादा थी और आलोचना कम। और यदि

सवेरे रवि और फातमावाली बात न निकल आयी होती तो शायद वह इतना झल्लाया हुआ न होता।

यह दिल कसी अजीब नगरी है। जिन्दगी भर आदमी उसी म भटकता रहता है। समझता है कि तमाम गली-कूचे देख लिये कि यकायक कोई नयी तारीक गली सामने आ जाती है और आदमी हैरान रह जाता है कि अभी पल भर पहले तक तो अँधेरे की यह गली नही थी। और इन नयी गलियो का गैर अँधेरा इतना वेदद होता है कि सपना के चिराग भी नही जलन देता।

जिस सैयदा को माजिद और सगीता के प्यार पर एतराज नही, वही सयदा फातमा और रवि के प्यार का इतना बुरा कैसे मान सकती है ?

'देखो जी।" सैयदा न कहा और लेटे-लेटे उठ बैठी। बेटे की बात और है। वह चाहे जिसे ले आये पर बेटी को हिन्दू तो हिन्दू है, सुन्नी तक से नही ब्याहूँगी।"

'क्या फजूल बात करती हो।" उसने सैयदा का हाथ अपने हाथ म लेना चाहा। सयदा ने अपना हाथ हटा लिया। "हिन्दू बहू और हिन्दू दामाद मे फक है भई।"

फक है।' सैयदा नै कहा। "अगर फातमा ने उस धोती महरोतरा के बेटे से शादी की सोची भी तो मैं कुछ खाकर मर जाऊँगी फिर तुम भी कोई हिन्दुनी ब्याह लाना और नेशनल इटिगरेशन करना।'

अब्बास अपनी उदासी के बावजूद खिलखिला के हँस पडा और सयदा फूट फूट के रोने लगी। और सयदा के आसुओ न उसके सपनो की गलियो को गीला कर दिया और वह अपनी उदासी को कम्बल की तरह ओढकर लेट गया।

हिज्र की रात कटी
सुबह हुई
दद की सुबह हुई

मलगुजे वक्त के बोसीदा कफन म लिपटी
शमय कुश्ता

ख्वाब के शहर मे, टूटी हुई, बिखरी हुई, हर एक ताबीर
मेरे जुनू की तकदीर
कही बजती नही कोई जजीर
दोस्तो !
दद का यह दिन भी गुजरने के लिए आया है।
शाम तक यह भी गुजर जायेगा
अपनी आंखो को सँभाले रखना
हिज्र की रात मे कुछ ख्वाब उगाने के लिए
इन्ही सपनो की जरूरत होगी।

खून के धब्बे धुलेंगे कितनी बरसातो के बाद

"क्या कह रही हो तुम।" विष्णुजी शेव करते-करते रुक गये।

'वही कह रही हूँ जो जमनाबाई ने कहा।" कान्ता महरोत्रा बोली। "मूसवी भाई साहब से डाइवोर्स लेके सैयदा पीलीभीत चली गयी। वहाँ उसका भाई डी एम है।"

"परन्तु उन दोनो म तो इतना प्यार था।"

"ऊह मट्टी डालो ऐसे प्यार पर।" कान्ता बोली 'जो पति की जरा-सी बात न माने।'

"झगडा क्यो हुआ।'

"मूसवी भाई साहब न कहा कि रवि अच्छा लडका है फातमा को उसी से ब्याहूँगा। इस पर वह बोली, अच्छा क्या होगा खाक! हिन्दू है। यह सुन के जमनाबाई तो कहती है कि मूसवी भाई साहब ने कस के थप्पड मार दिया, पर मैं यह नही मानती कि मूसवी भाइ साहब ऐसा कर सकते हैं। हाँ, डाटा जरूर होगा।"

"इन मुसलमानो म यही भारी दोष है। भाषण देंगे क्षेत्र और धम निरपेक्षता पर, परन्तु हिन्दू के लडके से बेटी नही ब्याहगे पर सयदा को

तो मैं सेकुलर समझता था। अन्दर से ऐसी कट्टर थी!   "

दरवाजे की घण्टी बजी।

पल भर बाद संगीता आयी।

'मूसवी अंकल आय हैं।"

"अभी आता हूँ।'

बाहर मूसवी टाइम्स आफ इण्डिया पढ़ने लगा। हालांकि वह पूरा टाइम्स आफ इण्डिया घर स पढ़ के आया था। फर्क क्या पडता है। दुनिया का अब यह हाल है कि अखबार नय हो ही नहीं पाते। वही झगडे। वही तनाव। वही हारें। वही जीतें।

"नमस्त मूसवी भाई!" विष्णुजी आ गये। 'क्षमा कीजियेगा, शेव कर रहा था।' अब्बास से हाथ मिलाकर बैठ जाते हैं। "भैया साफ बात यह है कि मुझे श्रीमती गांधी की यह बात पसन्द नहीं आ रही है। भिण्डरावाला सर पर चढा आ रहा है। पंजाब में रोज दो चार हिन्दू मारे जा रहे हैं, पर वह धर्मनिरपेक्षता की बात किये चली जा रही हैं कि साल हिन्दुओ, एक हाथ से ताली बजाये जाओ। मैं पूछता हूँ कि जब काबाशरीफ म सऊदी फौजें जा सकती हैं तो स्वर्ण मन्दिर मे भारतीय सेना क्यो नहीं जा सकती।' एकदम व चिल्लाये—"अरे भई चाय लाओ।" वह फिर मूसवी स बोले, ' भाभीजी कसी है।"

'वह परसो मुझसे लड़कर पीलीभीत चली गयी।"

' अरे!"

कान्ता चाय लेकर आ गयी। अब्बास न देखा कि मेहमान की प्याली का रंग ही दूसरा था और वह यह सोचने लगा कि क्या यहाँ आने के बाद फात्मा के बरतन भी अलग ही रहेंगे ?

"कुछ सुना तुमने।" विष्णुजी बोले, "सैयदा भाभीजी ने—'

सुना तो था।" कान्ता बोली। "पर पूछने की हिम्मत नहीं हो रही

थी। उसने मेहमानवाली प्याली अब्बास को देते हुए कहा। "पर ऐसा हुआ क्यो ?"

"बात यह है भाभी," अब्बास ने कहा 'कि फातमा और रवि एक दूसरे से प्यार करते हैं। सैयदा को यह प्यार अच्छा नही लगा।"

"मैं खुद भी इसी सिलसिले मे आपके पास आने की सोच रहा था।" विष्णुजी ने कहा, "वास्तव मे हमी लोगों को मिसाल बनानी पड़ेगी। यदि आपको कोई एतराज न हो तो रवि और फातमा बेटी का विवाह करके एक मिसाल क़ायम ही कर दें।"

अब्बास ने कान्ता की तरफ देखा।

"भाई साहब मेरी तरफ न देखिये।" कान्ता ने कहा। "मैं तो जैसी हूँ वैसी हूँ। फातमा आ जायेगी तो अपना बरतन-बासन अलग कर लूगी "

"अपना बरतन-बासन आप क्यो अलग करें, भाभी बरतन-बासन तो उसका अलग होना चाहिए।"

'ऐ भाई साहब, यह क्या कह रहे है आप। वह तो गहलक्ष्मी बन के आयेगी। मैं भला गृहलक्ष्मी का अपमान कर सकती हूँ।"

अब्बास ने गले म एक भरन-सी महसूस की तो समय लेन के लिए वह सिगरेट जलाने लगा।

'पहले तो धूमधाम से मँगनी की जाय।" विष्णुजी बोले "फेरे तो इम्तिहानो के बाद ही पड़ेंगे।

जी हाँ।' अब्बास ने कहा, 'पर मैं चाहता था कि दानो मँगनियाँ साथ ही माथ हो जायें।'

'दोनो ?" विष्णुजी की समझ मे यह बात नही आयी।

जी हाँ।' अब्बास ने कहा 'सगीता और माजिद की भी तो शादी करनी है न। मँगनी अभी किये दत हैं। निकाह होता रहेगा।"

'निकाह।'

अगर फात्मा के फेरे पडे तब तो सगीता का निकाह करना ही पडेगा न ।'

' देखिए भाई साहब, बुरा मत मानियेगा। विष्णुजी बोले ' अभी तक तो मैंने सगीता का रिश्ता ही नही स्वीकार किया है। हमारे खानदान मे और बहुत सी लडकिया है। आप तो जानते है कि मै हिन्दू मुसलमान के चक्कर ही मे नही पडता। मेरा धम तो मानवता है। परन्तु अगर सगीता को मुसलमाना मे ब्याह दिया तो खानदान की दूसरी लडकियो के लग्न मे बडी कठिनाई हो जायेगी और मेरी बेटी के मुसलमान होने का तो सवाल ही नही उठता। यह नेशनल इण्टिगरेशन की स्प्रिट के खिलाफ—"

'क्यो श्रीमान ?" कान्ता ने कहा "अगर इनकी फात्मा के फेरे पड सकते है तो तुम्हारी सगीता का निकाह क्यो नही होगा ? लडकी जहाँ जा रही है उसे वही की होकर रहना चाहिए।"

उस रात विष्णुजी और कान्ता मे पहला सीरियस झगडा हुआ।

"लडके की बात और है पर मै अपनी लडकी मुसलमानो म नही ब्याह सकता।"

"क्यो नही ब्याह सकते।" कान्ता बोली, "उसने मुसलमान लडके से प्यार किया है तो भुगते।"

"कमाल करती हो। मैं मुसलमान होता तो क्या तुम मुझसे ब्याह कर लेती ?"

'तुम मुसलमान होते तो मैं तुम्हे प्यार ही क्या करती।" कान्ता बोली, "पर जो प्यार करती तो ब्याह भी करती।"

' तुम भी कमाल की औरत हो कान्ता।"

"नही। मैं तुम्हारी औरत हूँ।' कान्ता बोली—गाँधीजी, नहरूजी, किदवईजी, आचाय नरेन्द्रदेव, पन्तजी, आदि-आदि की बहू ! समझे !" वह चमककर कमरे से निकल गयी और विष्णु महरोत्रा अपने फमिली अलबम

के साथ अकेले रह गये।

दादाजी गांधीजी के साथ।

यह पण्डितजी, किदवई दादा, जयप्रकाश नारायणजी और दादाजी।

दादाजी, आचार्य नरेन्द्रदेव के साथ।

पिताजी, डॉ लोहिया और अरुणा आसिफ अली।

पन्ने पलटते गये।

परन्तु गांधीजी ने विजयलक्ष्मी और डा सयद हुसन की शादी तो रोक ही दी थी।

कहते है पण्डित मोतीलाल की मुसलमान पत्नी भी थी हां भई तो पत्नी थी ना! और प्रियदर्शिनी ने जो फीरोज गांधी से शादी की फीरोज गांधी पारसी थे, मुसलमान नहीं थे। जो वह मुसलमान होते तो गांधीजी यह शादी कभी न होने देते।

धर्मनिरपेक्षता की जमीन बहुत कमजोर है। कुदाल, फावडे की जरूरत नहीं, नाखून से जरा सा खुरचें तो निरपेक्षता कागज की तरह फट जाती है और कोई शाही इमाम, कोई भिण्डरवाला, कोई देवरस कोई बाल ठाकरे निकल आता है। साम्प्रदायिकता का प्रेत हमारे अन्दर, दिलो की किसी अंधेरी गली मे छिपा बैठा है और जब किसी तरफ से रोशनी आने लगती है तो यह प्रेत उठकर दिल के दरवाजे खिडकियाँ बन्द कर देता है—

घटा जमीं पर झुकी हुई है
नदी का पानी
हवा के नेजो की चोट खाकर तडप रहा है
किनारे सहमे हुए खडे हैं
हवा के नाखून बडे दरख्तो के पैरहन मे धंसे हुए हैं
तमाम शाखें कराहती हैं
शगर के माथे से गीली मिट्टी पसीने की तरह गिर रही है

नदी के सीने पे एक इफरीत,

आग के सद हजार घुघरू पहन मे बेताल नाचता है।

शायद धर्म और साम्प्रदायिकता का कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है। या शायद है। सत्य क्या है। कान्ता या विष्णु महरोत्रा। सैयदा या अब्बास मूसवी? वाहिद की मुसलमानी कि माजिद, फातमा, रवि और सगीता के इश्क की अमर, अकबर एन्थोनी?

सत्य शायद एक बहुरूपिया है जो रोज कोई नया चेहरा लगाकर सामने आता है और कोई उसे पहचान नहीं पाता।

मेहरोत्राजी का फमिली अलबम भी शायद उसी सत्य का रूप है जिसने रवि और फातमा की शादी को स्वीकार कर लिया पर जा माजिद और सगीता की शादी स्वीकार न कर सका। पर वह कान्ता भी तो शायद इसी सत्य का एक रूप है जो मुसलमानो का छुआ नही खाती, जिसके घर मे धर्मनिरपेक्षता के बरतन अलग हैं पर जा रवि-फातमा और माजिद-सगीता ब्याहो का स्वागत करती है।

बलवो मे हिन्दू मुसलमान एक दूसरे को मारते भी है और एक दूसरे की जान भी बचाते हैं और कभी-कभार 'मिशटेक' भी कर बठते हैं।

दद की यह किताब शुरू से आखिर तक पढ डालना कितना मुश्किल काम है। जहा यह लगने लगता है कि शायद यह किताब खत्म होने जा रही है, वही से दद का कोई नया अध्याय शुरू हो जाता है। मूसवी पर भी वह रात भारी गुजरी। सैयदा बिन घर सूना लग रहा था। जैसे उसके सिवा कोई उस घर म रहता ही न रहा हो।

वाहिद भी उसके साथ चला गया था और फातमा और माजिद मुजरिमो की तरह अपने दिल की काल कोठरी म बन्द थे।

राम मोहन का बच्चा किचन मे रो रहा था।

अब्बास ने कृष्णा सोबती का 'जिन्दगीनामा' बन्द कर दिया। वह

बरसो से उसे पढने की कोशिश मे था पर पढ नही पाता था। कथन इतना उखडा उखडा था कि पढने का तार नही बँध पाता था। पर सैयदा की जुदाई की दुलाई ओढकर उसने सोचा था कि 'जिन्दगीनामा' को झेल जायेगा। पर जुदाई का धागा भी 'जिन्दगीनामा' को नही बाँध पाया।

वह गुनगुनाने लगा।

दश्त म आया तो बस एक पता याद रहा
उसकी दीवार के साय का मजा याद रहा

"आप सोय नही।" माजिद की आवाज़ ने उसे चौंका दिया।

माजिद के साथ फातमा भी थी। दोनो आकर उस पलँग पर बैठ गये। जिस पर सैयदा की जगह खाली थी।

और फातमा रोने लगी।

अब्बास ने उसे रोने दिया।

आप अम्मा को ले आइए।" माजिद ने कहा, "मैं सगीता से ब्याह करना नही चाहता।"

' मुझे भी रवि से ब्याह नही करना है।" फातमा ने कहा।

"पागलपन की बातें नही करते।" अब्बास को बोलना ही पडा। "हम और सैयदा बहुत दिनो साथ रह चुके हैं पर तुम लोगो ने तो अभी साथ रहना शुरू भी नही किया है।" वह दोनो के सर सहलाने लगा। "हम दोनो के रिश्ते की नब्ज़ पर सिफ तुम दोनो के इश्क ही का दबाव नही था। सैकडो हज़ारो दबाव हैं। जाओ जाकर सो जाओ।"

न ' फातमा ने कहा ' पहले आप वायदा कीजिए कि अम्मा को ले आयेंगे।'

यह इतनी सादा बात नही है बेटी।" उसने फातमा के गाल सहलाते हुए कहा, तुम्हारी अम्मा और मुझमे लडाई नही हुई है। हमारी सोच के

रास्ते अलग हो गय है। तुम्हारे शादी करने या न करने से इसका कोई ताल्लुक नहीं है। मुझमे और तुम्हारी अम्मा मे डिफरेंस आफ उपीनियन हो गया है। शाबाश ! जाके सो जाव "

दोनो फिर भी थोडी देर बैठे रहे फिर चुपचाप उठे और मूसवी को अपने गम के साथ अकेला छोडकर चले गय।

पर उस रात वह सो नहीं सका।

अकेले हो जाने का मतलब धीरे धीरे रात की तरह उतर रहा था।

अल्लाह ! हमारी किस्मत मे इतनी रातें क्यो हैं ?
रात के बाद भी रात आती रही है अब तक
कल का कुछ ठीक नहीं
क्या पता
रात ही आ जाय फिर इस रात के बाद
ऐसा लगता है कि अब
नीद के पेड मे ख्वाबा का कोई फूल नही
आज की रात गुज़र जाने दो
सुबह तक हम भी गुजर जायेंगे
बँध चुका रख्ते सफर
जख्म
जख्मा के निशा
बेवफाई का नमक
सारे गहमाये हुए वादा का दद
सारी जागी हुई रातो की थकन
सारे टूट हुए ख्वाबो की चुभन
दिल मे उतरे हुए सारे नश्तर
आर्जुओ की मिठास

थोडी-सी जीन की प्यास
मेहरबा चेहरे के दिन का कोई पल
चारागर जुल्फो की शब से काई रोशन लमहा
चम्पई वक्त की खुशबू मे
उसकी खेवाई के सारे मौसम बसाई हुई ओस
उसकी दिलदारी की हर राह गुजर

वह रात भर जागता रहा और सैयदा का याद करता रहा कि चिडिया के बोलने की आवाज आन लगी। सडकें जाग गयी। बसें चलने लगी। और गौरया का वह जोडा खिडकी पर आ गया जा पिछले दस दिनो से उसकी किताबो मे घासला बनाने का प्रयत्न कर रहा था

उसने गौरया को नही हँकाया। काई तो रहे। और वह दोनो किताबा के पीछे तिनके जमा करने लगी

सटक की आवाजें पूरी तरह जाग चुकी थी। इसी वक्त सयदा सुबह की पहली चाय पिलाया करती थी

कौशल्या, राम मोहन की पत्नी, चाय लेकर आयी। उसे जागता देखकर उसने घूघट खीच लिया।

अब्बास मुस्कुरा दिया। अब तक उसने शीला की न सूरत देखी थी और न ही आवाज सुनी थी। पर सयदा ने उसे यकीन दिलाया था कि शीला के पास सूरत भी है और आवाज भी।

उसने चाय की ट्रे मे अखबार उठा लिया।

31 अक्तूबर

वही दो नवम्बर की खबरें

पजाब म उग्रवादियो ने 5 हिन्दुओ को मार डाला।

मिसेज गाधी ने आन्ध्रप्रदेश मे कहा कि अगर उनके खून का आखिरी कतरा भी देश के काम आ जाये तो वह इसे अपना सौभाग्य समझेंगी।

लाल डेंगा बातचीत करने पर तैयार
हिंदुस्तान पाकिस्तान टेस्ट मैच
फरुखाबाद में एक दो सरोंवाला बच्चा पैदा हुआ

31 अक्तूबर की जो सबसे अहम खबर थी, वह कोई साढे दस बजे माजिद ले आया।

जयन्त धर्माधिकारी के साथ वह सियासी गप्प लड़ा रहा था।

'हिंदुस्तान मे सबसे छोटी अक्लीयत तो हिंदुस्तानियों की है माई डियर। इस माइनॉरिटी के अधिकारों की रक्षा के लिए भी तो कुछ करो "

धर्माधिकारी जोर से हसा और उस हँसी के बीच ही मे दौडा दौडा माजिद आया।

"मिसेज गाँधी को उनके गार्डों ने मार दिया।"

, सारी दुनिया के अखबारों और रेडियो स्टेशनों का यह खबर सुनाते-सुनाते गला पड गया कि मिसेज गाधी की हत्या हो गयी। परन्तु आकाश-वाणी और दूरदर्शन शाम के छह बजे तक उनके घायल ही होने की खबर देते रहे।

और फिर दिल्ली मे सन् 47 लौट आया।
ओस कच्चे घडे की तरह बर गयी
सोहनी बीच तूफान मे रह गयी
जामा मस्जिद मे अल्लाह की जात थी
चाँदनी चौक मे रात ही रात थी
रात ही रात
अँधेरा
जिन्दा जलाये जाते हुए इन्सान
ट्रेनें रोकी जाने लगी।

वसा से सिख चुन चुनकर नोचे जाने लगे।

वारिस शाह ! तुम कहाँ हो

समझ मे नही आता कि दिल्ली की किस्मत म लाशो का जो कोटा है, वह कब खत्म होगा।

दिल की वीरानी का क्या मजकूर हो
यह नगर सौ मरतबा लूटा गया।

दिल्ली का यह मरसिया मीर तकी मीर ने लिखा था।

आज कौन लिखेगा हिन्दुस्तान मे कोई इतना वडा शायर दिखायी भी नही दे रहा है

आपरेशन ब्ल्यू स्टार
भिण्डरावाला की मौत
तोहरा और लोगोवाल का हथियार डालना
पजाव मे उग्रवादियो की गिरफ्तारियाँ
स्वण मन्दिर के सरोवर से हथियारा का निकलना।
लन्दन के चौहान की तकरीरें।
खालिस्तान के नारे

यह सारी आवाजें धीमी पड गयी। नफरत का प्रेत-वेताल नाचता हुआ दिल्ली, कलकत्ता, पटना इन्दौर कानपुर, फरीदावाद की सडको पर आ गया।

वह इन्दिरा गांधीजी मुसलमानो को मसका लगानेवाली कही जाती थी वह पल भर म इन्दिरा माँ वन गयी और उसके हिन्दू बेटे, वेगुनाह सिखो को मारन के लिए सडको पर निकल आय।

असन्तोप का एक मौसम खत्म भी नही हो पाया था कि असन्तोप का एक दूसरा मौसम शुरू हो गया

और पता नही कि इस मौसम की उम्र कितनी है या यह कि इस

मौसम के बाद कौन सा मौसम आयगा।

घर से निकलें तो सही
अपनी वहशत के लिए ढग का सहारा ढूढें
ओस की झील मे हसरत का जज़ीरा ढूढें
वक्त बहता हुआ दरिया है तो क्या
सुख रुई का कोई एक तो लमहा होगा
चलें जिन्दाँ की तरफ
दार के साये मे खडे हो जायें
ढल चली उम्र की धूप अब तो बडे हो जायें।

बडे-बडे लोग आये।

इन्दिरा गाँधी का जनाजा शान से निकला। राजीव गाँधी ने चिता को आग दी। फिर वह लोग आने लग जो यह साबित करना चाहते थे कि वह नये प्रधानमन्त्री के करीब हैं

दुनिया भर के बडे-बडे लोग दूर स बैठे तमाशा सा देख रह थे

टी वी देखते-देखते अब्बास की आँखें दुखने लगी थी। पर राम मोहन चिपका बैठा हुआ था। उसकी पत्नी रो रही थी।

तो वह टी वी बन्द न कर सका। उठकर अपने कमरे मे चला गया और सैयदा की यादो की चादर ओढ के लेट गया सोचन लगा।

कब नजर म आयगी बेदाग सब्जे की बहार
खून के धब्बे धुलेंगे कितनी बरसातो के बाद

अहिंसावादी हिन्दुस्तान का दामन 2500 बरसो के खून से लिथडा हुआ है। चिपक रहा है बदन पर लहू से पैराहन।

कोई दश इतनी लम्बी मुददत तक अपन भविष्य के सपनो का अपमान कैसे सहन कर सकता है

"नज्म का उनवान है कलकत्ता मर रहा हैं।" मूसवी ने सामन बैठी

बडी भीड से कहा ।

"न जान कौन-सा अखबार था वह
किसी नेता का इक भाषण छपा था
कि कलकत्ता तो कब का मर चुका
कि शायद मर रहा है
मुझे मिलता जो वह नेता,
तो उससे पूछता इतना
कि भया यह बता दो
कि इस हिदुस्ता
जन्नत निशा म
कोई जिदा नगर
बस्ती
मुहल्ला
किस तरफ है
जिसे हिन्दूस्ता कहते हैं हम सब
वह हिदुस्ता नही है
वह मुर्दा बस्तिया का एक कब्रिस्तान है अब
वह इक श्मशान है अब "

कसरबाग की बारहदरी म बैठकर यह कविता पाठ उसे बडा अजीब लग रहा था। कि उसने देखा !

तीसरी कतार मे दाहनी तरफ से दूसरी कुरसी पर सयदा बठी रो रही है और बगलवाली कुरसी पर बठा वाहिद उसकी तरफ देख के हाथ हिला रहा है।

'यह मेरे अब्बा ह जनाब !" वाहिद ने पास बठे हुए एक अगरखापोश बुजुग को खबर दी । उन बुजुग को इस खबर म कोई दिलचस्पी नही थी ।

"हम लोग यह मुशायरा सुनने परताबगढ (प्रतापगढ) से यहाँ आये हैं। बात यह कि मेरे अब्बू और मेरी अम्मा मे झगडा हो गया "

सामने कोई और शायर तरन्नुम से कोई ग़जल सुना रहा था

सयदा आखें झुकाये बठी थी। बगल मे उसके छोटे भाई अली मुरतुजा ऐडवोकेट बैठे थे। वह अब्बास को आता देखकर हैरान हुए। मगर उठ गये। वह उस कुर्सी पर बैठ गया। वाहिद ने भी उसका आना नही देखा क्योकि वह उन बडे मिया से कानाफूसी मे लगा हुआ था।

'कसी हो ?" अब्बास न पूछा।

वह चाक पडी।

"उस खत मे मैं तुम्हे यह लिखना भूल गया था कि माजिद के साथ रवि ने भी खुदकुशी कर ली थी।"

सयदा चुप रही क्योकि वह आसू राकने की काशिश म लगी हुई थी।

' फात्मा कुछ कहती नही। पर हर वक्त तुम्हे याद करती रहती है।"

"वाहिद भी तुम्हे वहुत याद करता है।"

"वच्चा का यादो की सजा नही देनी चाहिए।"

' हाँ।"

शायर की आवाज आ रही थी

सास भी लो तो एक अँधेरा दिल के अन्दर उतरे

हम इस मली धूप को यारो किस पानी से धोयें।

छत उड गयी। शायर से वह शे'र बार-बार पढने की फरमाइश होन लगी। अब्बास सयदा और वाहिद को लिये हुए पैदल कसरबाग चौराहे की तरफ चल पडा। मुशायरे की आवाजें थोडी दूर साथ आयी और फिर शायद मुशायरे की तरफ लौट गयी।

०००

राही मासूम रजा

ज म 1 सितम्बर, 1927 ।

ज मस्थान गाजीपुर (उत्तर प्रदश) ।

शिक्षा प्रारम्भिक गाजीपुर, परवर्ती अलीगढ यूनिवर्सिटी म ।

जीविकोपाजन के लिए अलीगढ यूनिवर्सिटी मे ही अध्यापन काय प्रारम्भ। फिर शुरू हुआ फिल्म लेखन का दौर और बम्बई प्रस्थान। स्थापित होन का कडा सघप और साथ साथ ही हि दी उदू म समान रूप से सजनात्मक लेखन। केवल गद्य के क्षेत्र मे ही नही 'कविता' म भी प्रतिष्ठित हुए। फिल्म लखन कभी 'घटिया काम नहीं रहा। उतनी ही गम्भीरता यहाँ भी प्रदर्शित की जितनी कि सजनात्मक लेखन के प्रति थी।

एक ऐसे कवि कथाकार, जिनके लिए भारतीयता आदमीयत का तकाजा है।